हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमिं
रोहतक, रविवार 10 मई 2026

11 मजदूर परिवारों को बिना पुनर्वास के बेघर ...

12 युवा शक्ति कठिन परिस्थितियों में भी अपने ...

खबर संक्षेप

चेक बाउंस मामले में आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। एसपी के निर्देशों पर कार्रवाई करते हुए थाना शहर पुलिस भिवानी ने उद्घोषित आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। थाना शहर भिवानी के अंतर्गत पुलिस चौकी जैन चौक के मुख्य सिपाही आजाद ने चेक बाउंस मामले में फरार चल रहे उदघोषित आरोपी को जैन चौक भिवानी क्षेत्र से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। आरोपी की पहचान अमित निवासी वार्ड नंबर-2, हनुमान गेट, भिवानी के रूप में हुई है।

एक व्यक्ति को मादक पदार्थ सहित पकड़ा

भिवानी। पुलिस की एंटी नारकोटिक्स सैल तोशाम की टीम ने मादक पदार्थ सहित आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार एंटी नारकोटिक्स सैल के उप निरीक्षक अमरजीत सिंह अपनी टीम के साथ गश्त व पड़ताल ड्यूटी के दौरान बस अड्डा धनाना में मौजूद थे। इसी दौरान पुलिस टीम को सूचना प्राप्त हुई कि मेडिकल स्टोर के सामने दुकान के पास यक्ति मादक पदार्थ बेचने की फिराक में खड़ा है, जिसके पास काफी मात्रा में मादक पदार्थ मौजूद है। पुलिस टीम ने सूचना की गंभीरता को देखते हुए बताए गए स्थान पर रेड कर एक व्यक्ति को मादक पदार्थ सहित गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान राकेश उर्फ राके पुत्र सुंदर निवासी धनाना-3 जिला भिवानी के रूप में हुई है। तलाशी लेने पर आरोपी के कब्जे से 485 ग्राम चरस व 261 ग्राम अफीम बरामद की गई।

शहर में पांच दिन से नहीं उठा कूड़ा, हर तरफ फैल रही दुर्गंध

नायब तहसीलदार की गंदगी उठवाने की फरियाद को सफाई कर्मियों ने नकारा

शहर में लगभग 700-800 टन गंदगी जमा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

नगर पालिका कर्मचारी संघ के बैनर तले चल रही सफाई कर्मचारियों की हड़ताल ने शनिवार को नया मोड़ लिया। प्रशासन की ओर से नियुक्त ड्यूटी मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार शहर में पड़ी गंदगी उठवाने के लिए डंपिंग स्टेशन पहुंचे और उन्होंने वहां खड़े ट्रैक्टर ट्रॉलियों व जेसीबी मशीनों को निकलवाया। जैसे ही इसकी भनक सफाई कर्मचारियों को लगी, वे डंपिंग स्टेशन की ओर दौड़े। उन्होंने देवीलाल चौक पर दो ट्रैक्टर ट्रॉलियों व दो जेसीबी मशीनों को रुकवाया और वापस डंपिंग स्टेशन में खड़ा करवाया। इसके बाद ड्यूटी मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार व सफाई कर्मियों के बीच गंदगी उठवाने व नहीं उठवाने देने को लेकर तनातनी हुई, जिसके बाद ड्यूटी मजिस्ट्रेट ने सफाई कर्मचारियों के सामने हाथ जोड़े और शहर की गंदगी उठने देने की फरियाद की। इसके बाद सफाई कर्मचारियों ने कहा कि पहले हमारी मांगें मानी जाए या फिर हम सबको गिरफ्तार करें, इससे पहले हम शहर में पड़ी गंदगी का एक तिनका भी नहीं उठने देने की चेतावनी दी।

उल्लेखनीय हैं कि नगर पालिका कर्मचारी संघ के बैनर तले चल रही सफाई कर्मचारियों की हड़ताल ने शनिवार को नौवें दिन में प्रवेश कर गई और मामले ने नया मोड ले लिया। प्रशासन ने नायब तहसीलदार गौरव को ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया और पुलिस बल के साथ डंपिंग स्टेशन में खड़ी ट्रैक्टर ट्रॉलियों व जेसीबी मशीनों को बाहर निकलवाया, ताकि शहर में पड़ी गंदगी को उठवाया जा सकें। जैसे ही ये सूचना सफाई कर्मचारियों के कानों तक पहुंची वे समर्थित कर्मचारियों संगठनों सहित डंपिंग स्टेशन की ओर दौड़ और उन्हें रास्तें में आते दो ट्रैक्टर ट्रॉलियों व दो जेसीबी मशीनों को वापस मुड़वाकर डंपिंग स्टेशन में खड़ा करवाया। इसके बाद ड्यूटी मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार गौरव ने उन्हें समझाने व दबाव बनाने की कोशिश की, जिसके बाद कर्मचारियों ने नारेबाजी की और मांगें माने जाने तक या गिरफ्तारी होने तक शहर में पड़ी गंदगी का एक तिनका तक नहीं उठाने देने की चेतावनी दी।

पुलिस बल बैरंग लौटा

इसके बाद ड्यूटी मजिस्ट्रेट गौरव ने सफाई कर्मचारियों के सामने दोनों हाथ जोड़ फरियाद की कि शहर की हालत बद से बदतर हो गई हैं, जहां ज्यादा गंदगी फैली हैं, वहां से गंदगी उठवाने दें, लेकिन कर्मचारियों ने टका सा जवाब दिया कि सरकार व प्रशासन नौ दिन से कहां सो रहे थे और उन्होंने पहले कर्मचारियों से बातचीत क्यों नहीं की, जबरदस्ती कूड़ा उठवाने के लिए वाहन निकालने का प्रयास किया गया, जिसे कर्मचारी बर्दास्त नहीं करेंगे और जब तक मांगें नहीं मानी जाती या उन सबकी गिरफ्तारी होने तक शहर में पड़ी गंदगी का एक तिनका भी नहीं उठने देने की चेतावनी दी। इसके बाद ड्यूटी मजिस्ट्रेट व पुलिस बल बैरंग लौट गया। पांच दिन से कूड़े का उठान नहीं हुआ हैं और शहर में लगभग 700-800 टन गंदगी जमा हैं। इस दौरान कर्मचारी नेता संघ के प्रदेश सचिव पुरूषोत्तम दानव, जयहिंद पहलवान, अशोक गोयल, सत्यवीर स्वामी, सुरेश, अमित, शिवकुमार, सुरेश, शेरसिंह, विशेष, राहुल, बिट्टू, रमेश, बाला, मनीषा, द्रोपदी, सीमा व सुनीता आदि मौजूद रहे।

प्रशासन व सरकार ओछे हथकंडे न अपनाएं : दानव

नपा कर्मचारी संघ के प्रदेश सचिव पुरुषोत्तम दानव ने कहा प्रशासन व सरकार ओछे हथकंडे न अपनाएं, कर्मचारी चुप बैठा हैं, उसे छेड़ने की कोशिश न करें। हमारी मांगे जायज हैं, हमारी मांगों को सरकार व प्रशासन लागू करने का काम करें। अगर जबरदस्ती शहर की गंदगी उठवाने की कोशिश की तो कर्मचारी पीछे नहीं हटेगा और कर्मचारी आर पार की लड़ाई लड़ने का तैयार हैं। प्रशासन को जबरदस्ती करनी हैं तो हमारे ऊपर से वाहन ले जा सकता हैं, नहीं तो हम साइकिल का पहिया भी नहीं जाने देंगे। हमने कचरा प्वाइंटों व डंपिंग स्टेशन के आसपास अपने कर्मचारी साथी छोड़ रखे हैं, जैसे ही प्रशासन को औछी हरकत करेंगा, कर्मचारी मुहं तोड़ जबाव देंगा।

जहां हालात बदतर, वहां से उठाने दें गंदगी : गौरव

ड्यूटी मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार गौरव ने कर्मचारियों को बातचीत के दौरान कहा कि मेरी आपके साथ सहानुभूति हैं और आपसे अंतिम आग्रह हैं कि जहां बुरे हालत हैं, उसमें थोड़ी- सी राहत देने के लिए गंदगी उठवाने दें, मैं आपको हड़ताल खत्म करने की बात नहीं कहता, लेकिन जहां हालात बद से बदतर बने हुए हैं, कम से कम वहां से कुछ ट्रॉलिया गंदगी उठ जाएगी तो जनता को राहत मिल सकेगी। इस पर कर्मचारियों ने एक टूक जवाब दिया कि नौ दिन तक प्रशासन सोया हुआ था, उन्हें आज शहर की याद आ गई। हम अपने कार्य के प्रति ईमानदार हैं, लेकिन हम अपनी मांगों एवं अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं, इसलिए प्रशासन ओछी हरकत न करें।

राज्य स्तरीय मुएथाई चैंपियनशिप का शुभारंभ, बच्चों ने प्रस्तुतियां दी

भिवानी। कृष्णा कॉलोनी स्थित श्रीसनातन धर्म जगदीश कन्या पाठशाला में चौथी हरियाणा स्टेट यूथ मुएथाई चैंपियनशिप हुई, जिसमें प्रदेशभर के 216 खिलाड़ियों (लड़के व लड़कियां) भाग ले रहे हैं। प्रतियोगिता का शनिवार को शुभारंभ हुआ। मुईथाई स्पोर्ट्स एसोसिएशन हरियाणा के महासचिव सोमबीर वशिष्ठ ने बताया कि राज्य स्तरीय चैंपियनशिप में खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाएंगे।

प्रतियोगिता का शुभारंभ हरियाणा विद्यालय शिखा बोर्ड के रिटायर्ड सहायत सचिव ओपी नंदवानी व मुईथाई स्पोर्ट्स एसोसिएशन हरियाणा के प्रधान राहुल राणा ने गेम की शुरूआत करके किया। इस दौरान बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। नंदवानी ने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ खेल का भी अहम महत्व होता है। खेल से जुड़ने के बाद खिलाड़ी सुबह जल्दी उठता है तो उसका विकास होता है। खिलाड़ी खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। उन्होंने कहा कि आजकल बच्चे मोबाइल की तरफ अधिक आकर्षित हो गए हैं, जिनका उनके भविष्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसलिए अभिभावकों को भी सचेत रहकर बच्चों पर ध्यान रखने की जरूरत है। खेल से जुड़ने के बाद बच्चे मोबाइल से भी दूर रहेंगे।

खेत से मोटर और तार चोरी करने के मामले में आरोपी गिरफ्तार

बवानीखेड़ा। थाना बवानी खेड़ा पुलिस ने खेत से सबमर्सिबल मोटर और कॉपर तार चोरी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। । पुलिस के अनुसार गांव जाटू लोहारी निवासी महेश ने शिकायत दी थी कि 23 अप्रैल को जब वह अपने खेत में पहुंचा तो कमरे का ताला टूटा मिला और वहां से मोटर व कॉपर तार चोरी थे। शिकायत पर थाना बवानी खेड़ा में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान मुख्य सिपाही प्रवेश कुमार ने टीम के साथ कार्रवाई करते हुए आरोपी सुनील पुत्र सतबीर निवासी जाटू लोहारी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह ऑटो चलाने का काम करता है और नशे का आदी है। वह कुछ महीने पहले ही जिला कारागार हिसार से छूटकर आया था। आरोपी के खिलाफ आदमपुर में भी ट्रांसफार्मर चोरी का मामला दर्ज है।

मिष्ठान भंडार में शॉर्ट-सर्किट से लगी आग, सामान व फ्रीज जला

बवानीखेड़ा। कस्बे में शनिवार को सुबह मिष्ठान भंडार में अचानक आग लग गई। प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। घटना के बाद आसपास के दुकानदारों और लोगों में अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के अनुसार, शहीद गुलाब सिंह पार्क के सामने स्थित सैनी बीकानेर मिष्ठान भंडार से सुबह करीब छह बजे धुआं उठता दिखाई दिया। देखते ही देखते आग ने दुकान में रखे सामान को अपनी चपेट में ले लिया। सूचना मिलते ही नपा प्रधान सुंदर अत्री, गजेन्द्र कौशिक और मनीष शंकर सहित स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और दुकान मालिक व अग्निशमन विभाग को सूचना दी। हालांकि फायर ब्रिगेड के पहुंचने से पहले ही दुकानदारों और समाजसेवियों ने काफी मशक्कत कर आग पर काबू पा लिया। दुकान मालिक अजय सैनी ने बताया कि आग में तीन डी-फ्रीजर, मिठाइयां, फर्नीचर, बिजली फिटिंग और अन्य सामान जलकर राख हो गया। तैयार मिठाइयों के खराब होने से नुकसान और बढ़ गया। लोगों ने कहा कि यदि आग रात के समय लगती तो पास के किरयाणा स्टोर, अस्पताल और अन्य दुकानों तक फैल सकती थी, जिससे बड़ा हादसा हो सकता था। दुकानदार ने प्रशासन से मुआवजे की मांग की है।

30 हजार किसानों के शपथ पत्र राज्यपाल को सौंपने की तैयारी

बाढड़ा। कृषि क्षेत्र में संभावित स्मार्ट मीटर योजना और किसानों को मिलने वाली स्लैब प्रणाली खत्म होने की आशंका को लेकर भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) अब सरकार के खिलाफ सीधे मोर्चा खोलने की तैयारी में है। संगठन ने जून माह के प्रथम सप्ताह में भिवानी व चरखी दादरी जिले के करीब 30 हजार किसानों के शपथ पत्र प्रदेश के राज्यपाल प्रो. अशीम कुमार घोष को सौंपने का फैसला लिया है। भाकियू नेताओं ने क्षेत्र के गांव भांडवा, हड़ौदी, बाढड़ा सहित अनेक गांवों में पहुंचकर किसानों से शपथ पत्र भरवाने का अभियान तेज कर दिया है। संगठन का कहना है कि सरकार कृषि सिंचाई क्षेत्र के ट्यूबवैलों पर स्मार्ट मीटर लागू करने की तैयारी कर रही है, जिससे किसानों को वर्षों से मिल रही विशेष स्लैब प्रणाली खत्म होने का खतरा पैदा हो गया है। भाकियू अध्यक्ष हरपाल भांडवा ने कहा कि दक्षिणी हरियाणा में नहरी पानी की कमी के चलते किसान लंबे समय से बिजली संचालित ट्यूबवैलों पर निर्भर हैं। पहले भी स्लैब प्रणाली को समाप्त करने का प्रयास हुआ था, लेकिन वर्ष 2012 में लंबे किसान आंदोलन के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने इसे दोबारा बहाल किया था। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में स्मार्ट मीटर किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इसके विरोध में दो कमेटियों का गठन किया गया है, जो गांव-गांव जाकर किसानों के शपथ पत्र तैयार करवा रही हैं।

दक्षिणी हरियाणा में किसान लंबे समय से बिजली संचालित ट्यूबवेलों पर निर्भर

तीन युवाओं ने रक्तदान कर बचाई दो मरीजों की जान

भिवानी। रक्तदान महादान है, लेकिन जब किसी की जान हलक में अटकी हो और रगों में दौड़ने वाला खास ग्रुप कहीं ना मिले, तब एक-एक बूंद की कीमत जिंदगी और मौत के फासले के बराबर हो जाती है। भिवानी में दो दिनों से कुछ ऐसा ही मंजर देखने को मिला, जहां ए-नेगेटिव रक्त की अनुपलब्धता ने दो परिवारों की सांसें अटका दी थी। इस संकट की घड़ी में शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा व उनके साथियों ने मसीहा बन दो जिंदगियां बचाने का नेक काम किया। भिवानी के अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती दो मरीजों की हालत काफी गंभीर बनी हुई थी। डॉक्टरों ने आपातकालीन स्थिति में ए-नेगेटिव रक्त की व्यवस्था करने को कहा जो दुर्लभ ब्लड ग्रुप माना जाता है। मरीजों की बिगड़ती हालत देख परिजनों ने शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा से संपर्क किया तो उन्होंने बिना समय गंवाए स्थिति की गंभीरता को समझा और टीम को सूचना दी। टीम के सक्रिय सदस्य सतीश, नरेश और जयप्रकाश तत्काल रक्तदान के लिए अस्पताल पहुंचे और रक्तदान किया, जिससे दोनों मरीजों को समय पर ब्लड मिल सका और उनकी जान बच गई। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

LITTLE HEARTS GROUP OF SCHOOLS
(A Co-Educational English Medium Sr. Sec School) (Affiliated to C.B.S.E, New Delhi)
E-mail : md.lhps.pawangoel@gmail.com | Mob. : 8199997301, 8199997306, 8199997300
The Management, Principal & Educators of the school
FELICITATE THE STUDENTS FOR THEIR APPRECIABLE ACHIEVEMENT IN CLASS X & JEE MAINS
JEE MAINS APRIL 2026
ELIGIBLE FOR GOVT COLLEGES
RAGHAV 99.14%ILE
YESHDEEP 97.85%ILE
GAURAV 96.13%ILE
TUSHAR 95.76%ILE
MEHAK 95.68%ILE
MEGHA 91.73%ILE
HIMANSHU 90.11%ILE
YASMINE 89.3%ILE
NITESH 87.33%ILE
BHAVYA 83.75%ILE
HITESH 81.69%ILE
Class X CBSE (2025-26)
DIVYA 97.4%
MAHAK 97.4%
DAKSH 96.6%
SAKSHI 96.2%
NISHIKA 96%
AAKASHI 96%
MERITORIOUS STUDENTS OF CLASS X
ISHIKA 95.8% | VIDHI 95.6% | NIKHIL 95.4% | SURBHI 95.2% | ARYAN 95.2% | LOKESH 95% | GEETIKA 95% | DEEPANSHU 95% | MAYANK 95% | RONAK 95% | RAKSHIT 95% | KARTIKEY 93.8% | JAYANT 93.4% | REHAN 93.2%
AKSHITA 93.2% | KESHAV 93% | NISHTA 93% | TANMAY 93% | YUVRAJ 93% | ANJALI 92.8% | DIKSHA 92.8% | DEEPESH 92.8% | CHESHTHA 92.6% | AYUSH 92.6% | ADITYA 92.4% | JANVI 92.2% | DEEPTI 92.2% | ANSHUL 92%
NAMAN 91.8% | MANISHA 91.6% | HARSHIT 91.4% | NAITIK 91.2% | RIVAN 91.2% | AANYA 91.2% | PARTH 91% | TEJAS 91% | YOGESH 91% | DIMPI 90.8% | MEENU 90.8%
RAGHAV 90.4% | PRATEEK 90.4% | VANSH 90.4% | TANISHA 90.2% | CHETANYA 90% | HIMANGI 90% | HIMANI 90% | HIMANSHU 90% | AMAN 90% | KAVYA 90% | MANSHI 90%
100% RESULTS AT A GLANCE!
No. of students scoring above 90% 56
No. of students scoring above 85% 92
No. of students scoring above 80% 136
No. of students scoring above 75% 169
First Division Students 236
TRILOK CHAND GOYAL Chairman | DR. SANJAY GOYAL General Secretary | DR. PAWAN GOYAL Managing Director | SATYANARAYAN GOYAL Manager | RAVINDER GOYAL Manager | BHAWNA GOYAL Executive Director

विधायक घनश्याम सर्राफ ने गांव मानहेरू के जलघर का निरीक्षण किया

विधायक बोले-टैंकों की सफाई में कोताही बरती तो नपेंगे अधिकारी

टैंकों में गाद जमी मिली,फिल्टरों की सफाई व्यवस्था दुरुस्त नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

शुक्रवार को विधायक घनश्याम सर्राफ ने गांव मानहेरू के जलघर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जलघर के टैंकों में गाद जमी मिली,फिल्टरों की सफाई व्यवस्था दुरुस्त नहीं पाई। इनके अलावा पैम्पसेट भी खराब मिला। जिस पर विधायक ने पब्लिक हेल्थ विभाग के इंजीनियर इन चीफ को मोबाइल फोन पर मामले की जानकारी दी और जल्द ही इन टैंकों की सफाई कराने के निर्देश दिए।

विधायक ने पब्लिक हेल्थ के अधिकारियों को चेताया कि जल्द ही टैंकों की सफाई करवाई जाए। इस मामले में किसी तरह की कोई कोताही बर्दाश्त नहीं होगी। अगर किसी कोई लापरवाही बरती तो उनके शिकायत सीएम हाऊस में की जाएगी। विधायक के निरीक्षण की खबर मिलते ही उक्त इलाके के सभी जलघरों के अधिकारी व कर्मचारी अर्लट हो गए। विधायक के निरीक्षण के दौरान ग्रामीणों ने बताया कि गांव के जलघरों में ज्यादा दिनों का पानी का स्टॉक नहीं हो पाता। जिस वजह से जल्द ही पीने के पानी की राशनिंग करनी पड़ती है। इसको लेकर विधायक जलघर ने टैंकों का निरीक्षण किया तो वहां पर शिल्ट जमा मिली। विधायक ने तत्काल सफाई के निर्देश दिए।

विकास कार्यों के लिए धन की कमी नहीं: विधायक

विधायक घनश्याम सर्राफ ने गांव मधमाधवी में खेल स्टेडियम की चार दिवारी, गेट का लोकापर्ण किया। इस दौरान विधायक श्री सर्राफ ने बताया कि उन्होंने विकास कार्यो के लिए करीब 11 लाख रूपये की राशि मंजूर करवाई थी। जिसके तहत कुछ पैसा आया और जिसके तहत ये कार्य करवाए गए है। तथा गांव अजीतपुर में खेल स्टेडियम की चार दिवारी तथा गेट के कार्य का उदघाटन किया। इस दौरान विधायक सर्राफ ने कहा कि सार्वजनिक कार्यो के लिए सरकार के पास पैसे की कमी नहीं। बशर्ते ग्रामीण सार्वजनिक कार्य लेकर आए। उनको तत्काल पूरा करवाया जाएगा। इस दौरान दोनों गांवों के लोगों ने गांव की कुछ सार्वजनिक कार्य रखे। जिनको विधायक ने तत्काल पूरा करवाने का भरोसा दिलाया।

आईटीआर रिटर्न भरते समय बरतें सावधानी, छोटी गलती भी भारी

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना आज के डिजिटल दौर में पहले की तुलना में काफी आसान हो गया है, लेकिन इसमें लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर साल बड़ी संख्या में लोग खुद ही ऑनलाइन आईटीआर भरते हैं, फिर भी छोटी-छोटी गलतियों के कारण उनका रिटर्न अटक जाता है या उन्हें इनकम टैक्स विभाग से नोटिस मिल जाता है। कई बार लोग गलत फॉर्म चुन लेते हैं, तो कभी अपनी आय की पूरी जानकारी नहीं देते। वहीं, कुछ करदाता रिटर्न भरने के बाद उसका ई-वेरिफिकेशन करना ही भूल जाते हैं, जिससे पूरी प्रक्रिया अधूरी रह जाती है। इसके अलावा पर्सनल डिटेल्स में त्रुटि, टैक्स रिजीम का गलत चयन या फॉर्म 26एएस और एआईएस से मिलान न करना भी भारी पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि आईटीआर फाइल करते समय हर स्टेप को समझदारी और सावधानी के साथ पूरा किया जाए, ताकि किसी भी तरह की परेशानी से बचा जा सके।

सही फॉर्म का चयन पहली शर्त

■ आईटीआर फाइलिंग की प्रक्रिया में सबसे अहम कदम है सही फॉर्म का चुनाव।
■ आईटीआर-1 उन व्यक्तियों के लिए है जिनकी आय सैलरी, एक मकान और अन्य स्रोतों से होती है।
■ आईटीआर-2 उन लोगों के लिए है जिनकी बिजनेस इनकम नहीं है, लेकिन अन्य स्रोतों से आय है।
■ आईटीआर-3 बिजनेस या प्रोफेशन से जुड़े लोगों के लिए होता है।
■ आईटीआर-4 अनुमानित आय वालों के लिए है।
■ गलत फॉर्म चुनने से आपका रिटर्न रिजेक्ट हो सकता है या प्रोसेस में देरी हो सकती है।

ई-वेरिफिकेशन भूलना पड़ सकता है भारी

आईटीआर फाइल करने के बाद सबसे बड़ी गलती जो लोग करते हैं, वह है उसे वेरिफाई न करना। अगर आपने 30 दिनों के भीतर अपने रिटर्न को ई-वेरिफाई नहीं किया, तो इसे मान्य नहीं माना जाएगा। आप नेट बैंकिंग, आधार ओटीपी या ईवीसी के जरिए आसानी से वेरिफिकेशन कर सकते हैं।

पर्सनल डिटेल्स में गलती रोक सकती है रिफंड

■ नाम, पता, पैन, मोबाइल नंबर, जन्मतिथि या असेसमेंट ईयर जैसी जानकारी में छोटी सी गलती भी आपके रिफंड को रोक सकती है।
■ इसलिए फॉर्म भरते समय हर जानकारी को दोबारा जांचना बेहद जरूरी है।
■ साथ ही टैक्स रिजीम (पुरानी या नई) का गलत चयन भी आपकी टैक्स देनदारी को प्रभावित कर सकता है।
■ पूरी आय का खुलासा करना जरूरी
■ -कई करदाता सिर्फ सैलरी इनकम ही दिखाते हैं और अन्य स्रोतों को नजरअंदाज कर देते हैं।

आईटीआर में हर तरह की आय दिखाएं

■ बैंक ब्याज ■ किराया ■ कैपिटल गेन■ अन्य आय
■ यहां तक कि टैक्स फ्री आय को भी दिखाना चाहिए, ताकि आप सही तरीके से छूट का दावा कर सकें।

26एएस और एआईएस से जरूर करें मिलान

■ आईटीआर भरते समय फॉर्म 26एएस और एनुएल इंफोर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) का मिलान जरूरी है।
■ इनमें आपके टीडीएस, टीसीएस और एडवांस टैक्स की पूरी जानकारी होती है।
■ अगर जानकारी और इन रिकॉर्ड्स में अंतर पाया गया, तो रिफंड अटक सकता है या नोटिस मिल सकता है
■ अगर आपने एक वित्त वर्ष में एक से अधिक कंपनियों में काम किया है, तो हर कंपनी से फॉर्म 16 लेना जरूरी है। ऐसा न करने पर आपकी कुल आय गलत दिख सकती है और टैक्स कैलकुलेशन भी प्रभावित हो सकता है।

एडवांस टैक्स समय पर भरें

■ एडवांस टैक्स न भरना या देर से भरना भी एक आम गलती है। ■ इसे चार किस्तों में भरना होता है।
■ 15 जून■ 15 सितंबर■ 15 दिसंबर■ 15 मार्च
■ समय पर भुगतान नहीं तो 1% तक की पेनल्टी।

सावधानी ही बचाव

आईटीआर फाइलिंग एक जरूरी वित्तीय जिम्मेदारी है, जिसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। छोटी-छोटी गलतियां न सिर्फ आपके रिफंड को रोक सकती हैं, बल्कि आपको टैक्स नोटिस का सामना भी करना पड़ सकता है। इसलिए सही फॉर्म का चयन, सभी आय का खुलासा, दस्तावेजों का मिलान और समय पर वेरिफिकेशन ये सभी कदम बेहद महत्वपूर्ण हैं। अगर आप थोड़ी सावधानी और समझदारी से आईटीआर फाइल करते हैं, तो न सिर्फ प्रक्रिया आसान हो जाएगी, बल्कि आप किसी भी तरह की परेशानी से भी बच सकेंगे।

बाजार गिरे या चढ़े, बढ़ेगा पैसा ऐसे बनाएं निवेश का मास्टर प्लान

एक्सपर्ट के 5 फॉर्मूले अपनाने से आपका पोर्टफोलियो बनेगा 'मुनाफे की मशीन'

70:30 फॉर्मूला सुरक्षित निवेश और तेज ग्रोथ का संतुलन बनाएगा

मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियां बनती हैं लंबी रेस के घोड़े, विविधीकरण से घटेगा जोखिम

बिजनेस डेस्क

भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं है, लेकिन 2026 का बाजार पहले से ज्यादा जटिल और अवसरों से भरा हुआ नजर आ रहा है। ऐसे समय में निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही होता है कैसे निवेश करें, ताकि जोखिम भी कम रहे और रिटर्न भी बेहतर मिले? पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट्स का मानना है कि सही रणनीति, अनुशासन और धैर्य के साथ कोई भी निवेशक अपने पोर्टफोलियो को "मुनाफे की मशीन" में बदल सकता है। आज के दौर में केवल शेयर खरीदना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह समझना भी जरूरी है कि किस तरह का पोर्टफोलियो हर तरह के बाजार चाहे तेजी हो या गिरावट में संतुलन बनाए रख सके। निवेश का असली खेल 'टाइमिंग' नहीं, बल्कि 'टाइम इन मार्केट' है। यानी जितना ज्यादा समय आप बाजार में टिके रहते हैं, उतना ही ज्यादा कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। विशेषज्ञों के अनुसार, 2026 में निवेश के लिए '70:30' का फॉर्मूला सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक माना जा रहा है। इस फॉर्मूले के तहत निवेशक अपने पोर्टफोलियो का 70% हिस्सा मजबूत और स्थापित कंपनियों में लगाते हैं, जिन्हें 'कोर होल्डिंग्स' कहा जाता है। ये कंपनियां मजबूत बैलेंस शीट, बेहतर मैनेजमेंट और स्थिर आय के लिए जानी जाती हैं। बाजार में गिरावट के समय यही कंपनियां आपके निवेश को सुरक्षा देती हैं। वहीं, बाकी 30% हिस्सा 'टैक्टिकल इन्वेस्टमेंट' के लिए रखा जाता है। इसमें उभरते हुए सेक्टर्स, हाई ग्रोथ कंपनियां या शॉर्ट-टर्म ट्रेंड्स को ध्यान में रखकर निवेश किया जाता है। यह हिस्सा आपके पोर्टफोलियो को अतिरिक्त ग्रोथ देने का काम करता है। इस तरह यह फॉर्मूला सुरक्षा और आक्रामक ग्रोथ के बीच संतुलन बनाता है।

गिरावट में घबराएं नहीं, मौके पहचानें, धैर्य बनाए रखें

सही कंपनी का चयन ही असली खेल

शेयर बाजार में सफल निवेश केवल सही समय पर पैसा लगाने से नहीं, बल्कि सही कंपनी चुनने से तय होता है। विशेषज्ञों के अनुसार निवेश करने से पहले कंपनी के बिजनेस मॉडल, वित्तीय स्थिति और उसकी 'इकोनॉमिक मोट' को समझना बेहद जरूरी है। 'इकोनॉमिक मोट' का अर्थ उस विशेष ताकत से है, जो किसी कंपनी को प्रतिस्पर्धियों से अलग और मजबूत बनाती है। यह ताकत मजबूत ब्रांड वैल्यू, उन्नत तकनीक, बड़ा मार्केट शेयर, कम लागत पर उत्पादन या ग्राहकों का भरोसा हो सकती है।यदि किसी कंपनी का कारोबार लगातार बढ़ रहा हो, उसका कर्ज नियंत्रित हो और प्रबंधन पारदर्शी तरीके से काम करता हो, तो बाजार में आने वाली अस्थायी गिरावट का उस पर सीमित असर पड़ता है। ऐसी कंपनियां लंबे समय में निवेशकों को स्थिर और बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखती हैं।विशेषज्ञों का मानना है कि केवल सोशल मीडिया ट्रेंड, अफवाहों या 'हॉट टिप्स' के आधार पर निवेश करना जोखिम बढ़ा सकता है। निवेशकों को जल्दबाजी से बचते हुए कंपनी के फंडामेंटल्स, भविष्य की संभावनाओं और बिजनेस की गुणवत्ता का गहराई से विश्लेषण करना चाहिए।

विविधीकरण और लंबी अवधि

निवेश की दुनिया में एक पुरानी कहावत है "सारे अंडे एक टोकरी में मत रखो।" यही सिद्धांत शेयर बाजार में भी लागू होता है। विविधीकरण का मतलब है अपनी पूंजी को अलग-अलग सेक्टर्स और कंपनियों में बांटना ताकि किसी एक सेक्टर में गिरावट का असर पूरे पोर्टफोलियो पर न पड़े। उदाहरण के तौर पर, अगर आप केवल आईटी सेक्टर में निवेश करते हैं और उस सेक्टर में गिरावट आती है, तो आपका पूरा निवेश प्रभावित हो सकता है। लेकिन अगर आपने फाइनेंशियल, कंजम्पशन, मैन्युफैक्चरिंग और फार्मा जैसे अलग-अलग सेक्टर्स में निवेश किया है, तो एक सेक्टर की कमजोरी दूसरे सेक्टर की मजबूती से संतुलित हो सकती है। इसके साथ ही, लंबी अवधि का नजरिया बेहद जरूरी है। कई निवेशक छोटी-छोटी गिरावट से घबरा जाते हैं और जल्दबाजी में अपने निवेश को बेच देते हैं। लेकिन इतिहास बताता है कि जो निवेशक लंबे समय तक टिके रहते हैं, वही असली फायदा उठाते हैं। कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ ही काम करती है और धीरे-धीरे आपकी संपत्ति को कई गुना बढ़ा देती है और आपको पता भी नहीं चलता।

भावनाओं पर नियंत्रण सफल निवेशक की असली पहचान

शेयर बाजार में सफलता केवल ज्ञान या जानकारी से नहीं मिलती, बल्कि आपके व्यवहार और मानसिकता पर भी निर्भर करती है। बाजार में गिरावट के समय घबराहट और तेजी के समय लालच ये दोनों भावनाएं निवेशकों को गलत फैसले लेने पर मजबूर करती हैं। एक सफल निवेशक वही होता है जो इन भावनाओं पर नियंत्रण रख सके। जब बाजार गिरता है, तो उसे खतरे के बजाय अवसर के रूप में देखना चाहिए बशर्ते कंपनी के फंडामेंटल्स मजबूत हों। वहीं, तेजी के दौर में बिना सोचे-समझे निवेश करने से बचना चाहिए। एक तरह से निवेश में 'इमोशनल फायरवॉल' बनाना जरूरी है, जो आपको बाजार के शोर से दूर रखे और आपके फैसलों को तार्किक बनाए रखे। अनुशासन और धैर्य ही लंबे समय में बड़ी संपत्ति बनाने का आधार होते हैं।

सादगी, अनुशासन व धैर्य ही असली मंत्र

2026 के बदलते आर्थिक माहौल में निवेश करना चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। अगर आप 70:30 का संतुलित फॉर्मूला अपनाते हैं, मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियों को चुनते हैं, अपने निवेश को विविध बनाते हैं और भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, तो बाजार की हर स्थिति में अपनी संपत्ति को बढ़ा सकते हैं। याद रखें, शेयर बाजार में कोई शॉर्टकट नहीं होता। यहां सफलता उन्हीं को मिलती है जो धैर्य रखते हैं, अनुशासन का पालन करते हैं और लंबी अवधि के लिए निवेश करते हैं। अगर आप इन सिद्धांतों पर टिके रहते हैं, तो बाजार चाहे गिरे या चढ़े आपकी दौलत लगातार बढ़ती जाएगी।

डिफेंस म्यूचुअल फंड्स में 25% की छलांग मौका या जोखिम? ऐसे में क्या करें निवेशक

- एक माह की रैली ने निवेशकों के लिए बढ़ाया आकर्षण
- लेकिन एक्सपर्ट्स ने दे दी सावधानी बरतने की सलाह
- जियोपॉलिटिकल हालात व बढ़ते रक्षा खर्च ने दी रफ्तार
- चक्रीय प्रकृति वाला डिफेंस सेक्टर, उतार-चढ़ाव को रहें तैयार

पिछले एक महीने में डिफेंस सेक्टर से जुड़े म्यूचुअल फंड्स ने करीब 20% से 25% तक का शानदार रिटर्न दिया है। इतनी तेज बढ़त ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है और कई लोग इस सेक्टर में निवेश के अवसर तलाशने लगे हैं। लेकिन बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी के पीछे मजबूत फंडामेंटल्स से ज्यादा जियोपॉलिटिकल कारण और बाजार का मोमेंटम जिम्मेदार है। ऐसे में बिना सोचे-समझे निवेश करना जोखिम भरा साबित हो सकता है। जानकारों के अनुसार, निवेशकों को सिर्फ हालिया रिटर्न देखकर फैसले नहीं लेने चाहिए। बाजार में छोटी अवधि की तेजी अक्सर बाहरी घटनाओं से प्रभावित होती है, जबकि लंबी अवधि में किसी भी निवेश का प्रदर्शन उसकी कमाई, वैल्यूएशन और बिजनेस ग्रोथ पर निर्भर करता है।

जियोपॉलिटिकल तनाव बना तेजी का बड़ा कारण

डिफेंस सेक्टर में आई हालिया तेजी का मुख्य कारण वैश्विक स्तर पर बढ़ते तनाव और युद्ध जैसी परिस्थितियां हैं। जब दुनिया में अस्थिरता बढ़ती है, तो सरकारें रक्षा खर्च बढ़ाती हैं, जिससे इस सेक्टर की कंपनियों को अधिक ऑर्डर मिलने लगते हैं। इसका सीधा असर इन कंपनियों के शेयरों और उनसे जुड़े म्यूचुअल

फंड्स पर पड़ता है। हालांकि लंबे समय में डिफेंस सेक्टर की संभावनाएं मजबूत हैं जैसे कि भारत में स्वदेशीकरण को बढ़ावा, बढ़ता रक्षा बजट और मजबूत ऑर्डर बुक, लेकिन इस सेक्टर में प्रोजेक्ट्स को पूरा होने में समय लगता है।

'मोमेंटम फेज' में है डिफेंस सेक्टर

फिलहाल डिफेंस सेक्टर एक 'मोमेंटम फेज' से गुजर रहा है। यानी बाजार में तेजी से पैसा आ रहा है और निवेशकों का झुकाव इस सेक्टर की ओर बढ़ गया है। एक ही महीने में 20-25% तक का रिटर्न इस बात का संकेत है कि कीमतें कंपनियों के वास्तविक प्रदर्शन से ज्यादा बाजार की भावना और निवेश के फ्लो से प्रभावित हैं।

एसआईपी बनाम लंपसम : कैसे करें निवेश?

हालिया तेजी के बाद डिफेंस सेक्टर के वैल्यूएशन ऊंचे हो चुके हैं। ऐसे में एकमुश्त (लंपसम) निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। इसके बजाय एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर विकल्प है। एसआईपी का फायदा यह है कि निवेशक बाजार के उतार-चढ़ाव को औसत कर सकता है और जोखिम को कम कर सकता है।

डाइवर्सिफिकेशन ही सुरक्षित रास्ता

एक्सपर्ट्स का मानना है कि सीधे डिफेंस सेक्टर में निवेश करने के बजाय डाइवर्सिफाइड इक्विटी फंड्स में निवेश करना ज्यादा सुरक्षित है। जैसे फ्लेक्सी कैप, मल्टी कैप और लार्ज एंड मिड कैप फंड्स—ये विभिन्न सेक्टर्स में निवेश करते हैं और जोखिम को संतुलित रखते हैं। इन फंड्स में डिफेंस सेक्टर का एक्सपोजर भी होता है, लेकिन यह सीमित होता है, जिससे निवेशक को इस सेक्टर की ग्रोथ का फायदा तो मिलता है, लेकिन जोखिम कम रहता है। डिफेंस म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी आकर्षक जरूर है, लेकिन यह स्थायी नहीं हो सकती। निवेशकों को केवल शॉर्ट टर्म रिटर्न देखकर निर्णय लेने से बचना चाहिए।

रिस्क है, लेकिन सही प्लान के साथ यही बन सकता है सबसे बड़ा मौका

धैर्य, मेहनत और स्मार्ट प्लानिंग से शुरू करें काम

जॉब छोड़ें व बन जाएं खुद के बॉस, कम निवेश में तगड़ी कमाई के रास्ते बदलते दौर में नौकरी नहीं, स्किल और सोच भी बन रही है असली ताकत

आइडिया

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में सिर्फ नौकरी पर निर्भर रहना कई लोगों को सीमित लगता है। बढ़ती महंगाई, सीमित सैलरी ग्रोथ और काम का दबाव ये सभी कारण लोगों को खुद का बिजनेस शुरू करने की ओर प्रेरित कर रहे हैं। हालांकि नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना एक बड़ा और जोखिम भरा फैसला होता है, लेकिन सही योजना, स्किल और मार्केट की समझ के साथ यह कदम आपकी जिंदगी बदल सकता है। अगर आप भी अपने करियर में बदलाव चाहते हैं और खुद का काम शुरू करने की सोच रहे हैं, तो मौजूदा ट्रेंड्स के आधार पर कुछ ऐसे बिजनेस आइडियाज हैं, जिन्हें कम निवेश में शुरू करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। खास बात यह है कि इनमें से ज्यादातर काम आप अपनी मौजूदा स्किल्स के दम पर ही शुरू कर सकते हैं। इससे आप खुद के बॉस बनकर अच्छी कमाई कर सकते हैं और अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना बड़ा और चुनौतीपूर्ण फैसला होता है। इसमें केवल उत्साह ही नहीं, बल्कि सही रणनीति, धैर्य और लगातार मेहनत की भी जरूरत होती है। बिना तैयारी या केवल दूसरों को देखकर लिया गया निर्णय कई बार आर्थिक और मानसिक दबाव बढ़ा सकता है।

सही योजना बदल सकती है जिंदगी

नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना आसान नहीं है, लेकिन सही दिशा में उठाया गया कदम आपकी पूरी जिंदगी बदल सकता है। इन 5 बिजनेस आइडियाज की खासियत यह है कि ये वर्तमान ट्रेंड्स पर आधारित हैं और इनमें ग्रोथ की जबरदस्त संभावनाएं हैं। अगर आप धैर्य, मेहनत और स्मार्ट प्लानिंग के साथ काम करते हैं, तो शुरुआत छोटी हो सकती है, लेकिन सफलता बड़ी जरूर होगी। हालांकि नौकरी छोड़कर बिजनेस शुरू करना एक बड़ा और चुनौतीपूर्ण फैसला होता है। इसमें केवल उत्साह ही नहीं, बल्कि सही रणनीति, धैर्य और लगातार मेहनत की भी जरूरत होती है। बिना तैयारी या केवल दूसरों को देखकर लिया गया निर्णय कई बार आर्थिक और मानसिक दबाव बढ़ा सकता है। इसलिए किसी भी नए बिजनेस की शुरुआत से पहले अपने कौशल, अनुभव, बजट और बाजार की वास्तविक जरूरतों को समझना बेहद जरूरी है।

कंसल्टेंसी/फ्रीलांसिंग : अनुभव कमाई का जरिया

आज का समय 'स्किल इकॉनमी' का है, जहां आपकी योग्यता ही आपकी सबसे बड़ी पूंजी होती है। अगर आपने किसी कॉर्पोरेट सेक्टर में काम किया है जैसे आईटी, मार्केटिंग, एचआर या फाइनेंस तो आप आसानी से कंसल्टेंसी या फ्रीलांसिंग एजेंसी शुरू कर सकते हैं। इस बिजनेस में आपको बड़े ऑफिस या भारी निवेश की जरूरत नहीं होती। एक लैपटॉप, अच्छा इंटरनेट और प्रोफेशनल नेटवर्क ही आपकी शुरुआत के लिए काफी हैं। शुरुआत में आप छोटे क्लाइंट्स के साथ काम करके धीरे-धीरे अपनी टीम बना सकते हैं। कंसल्टेंसी बिजनेस की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें कमाई की कोई सीमा नहीं होती। शुरुआती स्तर पर ही 50 हजार से 1.5 लाख रुपये महीना कमाना संभव है।

क्लाउड किचन : खाने के बिजनेस में मौका

खाने-पीने का बिजनेस हमेशा से लाभदायक रहा है, लेकिन अब इसका स्वरूप बदल चुका है। आज लोग रेस्टोरेंट जाने के बजाय घर बैठे खाना ऑर्डर करना ज्यादा पसंद करते हैं। यही वजह है कि क्लाउड किचन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। क्लाउड किचन की खासियत यह है कि इसमें आपको रेस्टोरेंट की तरह महंगा सेटअप या बड़ी जगह की जरूरत नहीं होती। आप अपने घर से या छोटे किचन स्पेस से भी शुरुआत कर सकते हैं। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म पर रजिस्ट्रेशन करके आप अपने प्रोडक्ट को बड़े बाजार तक पहुंचा सकते हैं। इस बिजनेस में लागत अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि मुनाफे की संभावना ज्यादा होती है। सही क्वालिटी और मार्केटिंग के साथ आप पहले ही महीने से अच्छी कमाई शुरू कर सकते हैं।

ई-कॉमर्स/ड्रॉपशिपिंग : स्मार्ट तरीका

डिजिटल इंडिया के इस दौर में ऑनलाइन बिजनेस तेजी से बढ़ रहा है। ई-कॉमर्स और ड्रॉपशिपिंग ऐसे मॉडल हैं, जिनमें आप बिना ज्यादा निवेश के अपना ऑनलाइन स्टोर शुरू कर सकते हैं। ड्रॉपशिपिंग की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें आपको प्रोडक्ट स्टॉक करने की जरूरत नहीं होती। जब ग्राहक ऑर्डर करता है, तो सप्लायर सीधे उस प्रोडक्ट को ग्राहक तक पहुंचाता है। इससे आपको गोदाम या इन्वेंट्री की चिंता नहीं रहती। यह बिजनेस पूरी तरह से ऑटोमेशन और डिजिटल मार्केटिंग पर आधारित है। सही रणनीति के साथ आप घर बैठे ही अच्छी कमाई कर सकते हैं। टेक गैजेट्स, किचन आइटम्स, हैंडीक्राफ्ट्स और इको-फ्रेंडली प्रोडक्ट्स जैसे सेगमेंट में काफी संभावनाएं हैं। यह बिजनेस धीरे-धीरे आपको 'पैसिव इनकम' का स्रोत भी दे सकता है, जहां आप सोते हुए भी कमाई कर सकते हैं।

ईवी चार्जिंग/ग्रीन एनर्जी : कल बनें लीडर

इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती लोकप्रियता ने एक नए बिजनेस सेक्टर को जन्म दिया है ईवी चार्जिंग स्टेशन। आने वाले वर्षों में यह सेक्टर तेजी से बढ़ने वाला है, जिससे इसमें निवेश करने वालों के लिए बड़े अवसर पैदा हो रहे हैं। आप रेजिडेंशियल सोसाइटी, मॉल या कमर्शियल एरिया में ईवी चार्जिंग पॉइंट लगाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसके साथ ही, ईवी मेंटेनेंस और रिपेयरिंग सर्विस जोड़कर अपनी आय को और बढ़ा सकते हैं। हालांकि इस बिजनेस में शुरुआती निवेश थोड़ा ज्यादा होता है, लेकिन इसकी लॉन्ग-टर्म संभावनाएं बेहद मजबूत हैं। अगर आप शुरुआती दौर में इस सेक्टर में कदम रखते हैं, तो आने वाले समय में बड़ी सफलता हासिल कर सकते हैं।

डिजिटल कंटेंट/ऑनलाइन कोर्स

अगर आपके पास किसी विषय की गहरी जानकारी है चाहे वह स्टॉक मार्केट हो, पढ़ाई, फिटनेस, कुकिंग या टेक्नोलॉजी तो आप उसे डिजिटल कंटेंट या ऑनलाइन कोर्स के रूप में बदल सकते हैं। आज के समय में यूट्यूब, सोशल मीडिया और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स के जरिए लाखों लोग अपनी स्किल्स को बिजनेस में बदल रहे हैं। इस मॉडल की खासियत यह है कि इसमें आप खुद का ब्रांड बनाते हैं और आपकी कमाई आपकी मेहनत और पहचान पर निर्भर करती है। शुरुआत में आपको एक अच्छे स्मार्टफोन, माइक्रोफोन और बेसिक एडिटिंग सेटअप की जरूरत होती है। जैसे-जैसे आपका कंटेंट लोकप्रिय होता है, आपकी कमाई भी तेजी से बढ़ती जाती है। यह बिजनेस आपको नाम, पैसा और स्वतंत्रता तीनों देता है।

पहली ईएमआई चल रही है, फिर भी चाहिए लोन?

- एफओआईआर का खेल : इनकम का कितना हिस्सा ईएमआई में जा रहा
- ईएमआई ज्यादा तो लोन मुश्किल, बैंक कैसे तय करते हैं आपकी क्षमता
- लोन का टाइप भी अहम : होम, पर्सनल या क्रेडिट कार्ड का फर्क

सावधानी

बिजनेस डेस्क

आज के समय में लगभग हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी लोन की ईएमआई चुका रहा है। चाहे वह होम लोन हो, कार लोन या फिर क्रेडिट कार्ड का बकाया। ऐसे में जब अचानक पैसों की जरूरत पड़ती है, तो सबसे बड़ा सवाल यही उठता है कि क्या पहले से ईएमआई चलने के बावजूद नया लोन मिल सकता है? जवाब है हां, मिल सकता है, लेकिन इसके लिए कुछ जरूरी शर्तों को पूरा करना होता है। बैंक सिर्फ आपकी सैलरी देखकर लोन मंजूर नहीं करते, बल्कि यह भी देखते हैं कि आपकी आय का कितना हिस्सा पहले से ईएमआई में जा रहा है और आपके पास कितना पैसा बच रहा है। यही गणित तय करता है कि आप नए लोन के लिए योग्य हैं या नहीं।

ईएमआई घटाएं, लोन की राह बनाएं, छोटे बदलाव का बड़ा असर

एफओआईआर क्या है

जब आप किसी बैंक या फाइनेंशियल संस्थान में लोन के लिए आवेदन करते हैं, तो सबसे पहले आपकी आय और खर्च का विश्लेषण किया जाता है। इसमें एक अहम भूमिका निभाता है एफओआईआर यानी फिक्स्ड ऑब्जेक्शन टू इनकम रेशियो। एफओआईआर यह बताता है कि आपकी कुल मासिक आय का कितना हिस्सा पहले से चल रही ईएमआई में खर्च हो रहा है। उदाहरण के तौर पर, अगर आपकी सैलरी 1 लाख रुपये है और आप 40,000 रुपये ईएमआई दे रहे हैं, तो आपका एफओआईआर 40% होगा। बैंक आमतौर पर 50% से कम एफओआईआर को सुरक्षित मानते हैं। अगर यह अनुपात 60% या उससे ज्यादा हो जाता है, तो बैंक को लगता है कि आप पर कर्ज का बोझ ज्यादा है, जिससे नए लोन की मंजूरी मुश्किल हो सकती है।

ईएमआई ज्यादा होने पर मुश्किल

जितनी ज्यादा आपकी मौजूदा ईएमआई होगी, उतनी ही कम आपकी नई लोन लेने की क्षमता होगी। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप नया लोन भी बिना किसी परेशानी के चुका सकें। अगर आपकी आय का बड़ा हिस्सा पहले से ईएमआई में जा रहा है, तो बैंक के लिए यह जोखिम बढ़ जाता है कि आप भविष्य में भुगतान करने में चूक कर सकते हैं। इसी वजह से ज्यादा ईएमआई वाले ग्राहकों को या तो लोन नहीं मिलता या फिर कम राशि का लोन ऑफर किया जाता है।

लोन का प्रकार भी करता है असर

■ सिर्फ ईएमआई की राशि ही नहीं, बल्कि यह भी मायने रखता है कि आपका लोन किस प्रकार का है।
■ होम लोन : इसे सबसे सुरक्षित माना जाता है, क्योंकि इसके बदले संपत्ति गिरवी होती है।
■ कार लोनः मध्यम जोखिम की श्रेणी में आता है।
■ पर्सनल लोनः इसमें जोखिम ज्यादा होता है, क्योंकि यह बिना किसी गारंटी के दिया जाता है।
■ क्रेडिट कार्ड बकायाः इसे सबसे ज्यादा जोखिम वाला माना जाता है।
■ बैंक ऐसे ग्राहकों को प्राथमिकता देते हैं, जिनका कर्ज संतुलित और नियंत्रित होता है। अगर आपके पास ज्यादा अनसिक्योर्ड लोन (जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड) हैं, तो नया लोन मिलने में दिक्कत हो सकती है।

क्या ईएमआई कम करके बढ़ा सकते हैं लोन की संभावना?

अगर आप नया लोन लेना चाहते हैं, तो अपनी मौजूदा ईएमआई को कम करना एक अच्छा उपाय हो सकता है। इसके लिए आप छोटे-छोटे लोन पहले बंद कर सकते हैं। मान लीजिए आपकी सैलरी 1 लाख रुपये है और ईएमआई 50,000 रुपये है (एफओआईआर = 50%)। अगर आप 5,000 रुपये की ईएमआई वाला लोन बंद कर देते हैं, तो एफओआईआर घटकर 45% हो जाएगा। इससे आपकी लोन लेने की क्षमता बढ़ सकती है। हालांकि, यह ध्यान रखना जरूरी है कि लोन बंद करने के बाद इसका असर आपके क्रेडिट रिकॉर्ड में दिखने में 30–45 दिन का समय लग सकता है।

क्रेडिट स्कोर बनाम ईएमआई

लोन लेते समय क्रेडिट स्कोर भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आमतौर पर 750 या उससे अधिक का स्कोर अच्छा माना जाता है और इससे बैंक का भरोसा बढ़ता है। लेकिन सिर्फ अच्छा क्रेडिट स्कोर होना ही काफी नहीं है। अगर आपकी ईएमआई पहले से ज्यादा है और एफओआईआर उच्च स्तर पर है, तो लोन मिलने में परेशानी हो सकती है।

सरल शब्दों में ऐसे समझें

■ क्रेडिट स्कोर बैंक का भरोसा बढ़ाता है
■ एफओआईआर (ईएमआई का बोझ) तय करता है कि कितना लोन मिलेगा
■ नया लोन लेने से पहले ध्यान रखें ये बातें
■ अपनी सभी ईएमआई की सही जानकारी बैंक को दें, कुछ भी छिपाने की कोशिश न करें।
■ कोशिश करें कि आपकी कुल ईएमआई आपकी आय के 40% के आसपास ही रहे।
■ छोटे और अनावश्यक लोन को पहले बंद करें।
■ क्रेडिट कार्ड का बकाया समय पर चुकाएं।
■ खर्च और कर्ज के बीच संतुलन बनाए रखें।
■ सही बैलेंस से ही मिलेगा नया लोन

सही संतुलन बनाए रखें

अगर आपके ऊपर पहले से ईएमआई चल रही है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपको नया लोन नहीं मिल सकता। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप अपनी आय, खर्च और कर्ज के बीच सही संतुलन बनाए रखें। एफओआईआर को नियंत्रित रखना, क्रेडिट स्कोर अच्छा बनाए रखना और अनावश्यक कर्ज से बचना— ये तीन बातें आपको आसानी से नया लोन दिला सकती हैं। सही प्लानिंग के साथ आप न सिर्फ नया लोन ले सकते हैं, बल्कि अपनी वित्तीय स्थिति को भी मजबूत बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

मेगा माइंड विद्यालय में मातृ दिवस मनाया

तोशाम। मेगा माइंड वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मातृ दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में विद्यार्थियों की माताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य माताओं के प्रति सम्मान, प्रेम एवं कृतज्ञता व्यक्त करना रहा। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न मनोरंजक खेलों एवं फन एक्टिविटीज का आयोजन किया गया, जिनमें माताओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

शिविर में 160 मरीजों का स्वास्थ्य जांचा

बहल। भूतपूर्व सैनिक कष्ट निवारण समिति बहल एवं भारत अस्पताल हिसार के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के लिए निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विभिन्न रोगों से पीड़ित करीब 160 मरीजों के स्वास्थ्य की जांच कर उन्हें निशुल्क दवाइयां वितरित की गईं। शनिवार को लोहारू रोड स्थित शहीद स्मारक में आयोजित शिविर में चिकित्सकों ने मरीजों की ब्लड प्रेशर, शुगर, हड्डी, जोड़, हृदय एवं अन्य सामान्य बीमारियों की जांच करते हुए उचित परामर्श दिया।

सुपरवाइजर को काम में तेजी लाने के दिए निर्देश

तोशाम। शनिवार को जिला जनगणना अधिकारी कम उपायुक्त भिवानी के आदेशानुसार तहसील परिसर में चार्ज जनगणना अधिकारी कम नायब तहसीलदार तोशाम ने जनगणना सुपरवाइजर की बैठक का आयोजन किया। जिसमें जनगणना सुपरवाइजर को अपने सर्कल में रह कर अपने प्रगणकों को कार्य में तेजी लाने को कहा। समय पर समय पर जिला जनगणना अधिकारी कम उपायुक्त भिवानी द्वारा रिपोर्ट मांगी जा रही है। बैठक में नायब तहसीलदार ने कहा कि आपको जो समस्या है उन्हें बताए उनका समाधान किया जाएगा। नायब तहसीलदार तोशाम ने यह भी कहा कि हम व्यवस्था का एक हिस्सा हैं हमें मिल जुल कर इस कार्य को करना होगा।

विधायक ने हर संभव मदद का भरोसा दिलाया

बवानीखेड़ा। विधायक कपूर वाल्मीकि के निवास स्थान पर राष्ट्रीय ओड सभा के पदाधिकारीगण दयानंद बाजल ओड, पूर्व पार्षद पंकज महता के नेतृत्व में अनेक लोग मिले और कुछ दिन पूर्व हाइड्रा पर काम कर रहे सतबीर ओड की मृत्यु को लेकर उनकी पत्नी देवी को आर्थिक मदद दिलाने की मांग रखी। इस पर विधायक ने हर संभव मदद करने का भरोसा दिलवाया।

सेंट जेवियर्स स्कूल में मदर्स डे मनाया

भिवानी। सेंट जेवियर्स स्कूल भिवानी में मदर्स डे के अवसर पर समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माताओं के सम्मान में तिलक लगाकर की गई। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधक मनीष सिंह, स्कूल निर्देशिका कीर्ति चौहान एवं प्रधानाचार्या उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने सुंदर गीत, कविता एवं भाषण प्रस्तुत किए। बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग नृत्य ने सभी का मन मोह लिया और माँ के जीवन में महत्व को भावपूर्ण तरीके से दर्शाया।

दहेजा प्रथा के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम

भिवानी। गांव कलिंगा स्थित राजकीय माध्यमिक स्कूल में विद्यार्थियों को दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ जागरूक किया। कार्यक्रम में बच्चों को विस्तार से बताया कि दहेज प्रथा न केवल कानूनी अपराध है, बल्कि मानवीय गरिमा के भी खिलाफ है। वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि शिक्षित समाज में ऐसी प्रथाओं के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। आंगनबाड़ी सुपरवाइजर सविता एवं निर्मला परमार रिवाड़ीखेड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए दहेज प्रथा के घातक परिणामों पर प्रकाश डाला। उपस्थित छात्रों से आह्वान किया कि वे अपने घरों और आसपास के लोगों को शिक्षित करें और स्वयं भी भविष्य में बिना दहेज की शादी का संकल्प लें।

कच्चे सफाई कर्मचारियों के समर्थन में उतरी भीम आर्मी

मजदूर परिवारों को बिना पुनर्वास के बेघर करना अमानवीय : संतलाल

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भीम आर्मी भारत एकता मिशन बवानीखेड़ा इकाई द्वारा बवानी खेड़ा क्षेत्र में बुलडोजर कार्रवाई से प्रभावित पीड़ित परिवारों के पुनर्वास एवं उचित मुआवजे की मांग को लेकर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा गया।

कर्मचारियों को पक्का करने की उठाई मांग

भीम आर्मी हरियाणा के प्रदेश महासचिव एडवोकेट संतलाल अंबेडकर के नेतृत्व में संगठन के पदाधिकारियों एवं स्थानीय लोगों ने तहसील परिसर पहुंचकर प्रशासन से मांग की कि जिन गरीब परिवारों के मकान तोड़े गए हैं उन्हें जल्द से जल्द पुनः बसाया जाए तथा उनके रहने और खाने की उचित व्यवस्था की जाए।

ज्ञापन के माध्यम से प्रशासन को अवगत करवाया गया कि गरीब एवं मजदूर परिवार पहले ही आर्थिक रूप से कमजोर हैं ऐसे में बिना पुनर्वास के उन्हें बेघर करना अमानवीय है। भीम आर्मी ने मांग की कि पीड़ित परिवारों को न्याय दिया जाए,बुलडोजर कार्रवाई पर रोक लगाई जाए तथा दोषी अधिकारियों के खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए। भीम आर्मी भारत एकता मिशन के पदाधिकारी नगर पालिका बवानीखेड़ा के सफाई कर्मचारियों के धरने पर पहुंचे और अपना समर्थन दिया। संगठन ने कहा कि वर्षों से कार्य कर रहे कच्चे सफाई कर्मचारियों के साथ लगातार अन्याय हो रहा है। भीम आर्मी ने सरकार एवं प्रशासन से मांग की कि सभी कच्चे सफाई कर्मचारियों को तुरंत पक्का किया जाए और उन्हें स्थायी कर्मचारियों की तरह सभी सुविधाएं प्रदान की जाएं। संगठन के नेता संतलाल अंबेडकर ने कहा कि भीम आर्मी हमेशा गरीब, मजदूर, शोषित एवं वंचित समाज की आवाज उठाती रहेगी और अन्याय के खिलाफ संघर्ष जारी रहेगा।

भिवानी। बवानीखेड़ा मामले को लेकर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते हुए।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर भीम आर्मी प्रदेश महासचिव एडवोकेट संतलाल अंबेडकर, प्रदेश सचिव जुगनू मेहरा, प्रदेश सलाहकार रिसपाल सिंह, नेता प्रवीण मेहरा, स्वामी सुरेशानंद, जिला अध्यक्ष मास्टर गौरव भुरटाना, जिला मीडिया प्रभारी चौ.टीना बलियाली,जिला उपाध्यक्ष अनिल काजला, जिला उपाध्यक्ष हितेश यादव, जिला उपाध्यक्ष कश्मीर भूकल, जिला सचिव सुरेंद्र चोपड़ा, हलका अध्यक्ष अजय भोरिया, हलका प्रभारी बवानीखेड़ा मोनू, हलका अध्यक्ष भिवानी राकेश सांगा, हलका उपाध्यक्ष तोशाम राधेश्याम धीलोड, जोगेंद्र एवं पीड़ित परिवार उपस्थित रहे।

राजनीति की बजाए पीड़ित परिवार का सहयोग करें: पंकज मेहता

बवानीखेड़ा। पार्क निर्माण को लेकर नपा द्वारा हटाए गए कब्जों का मामला लगातार चर्चा में बना हुआ है। इस मुद्दे पर जहां विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता और सामाजिक संगठन मौके पर पहुंचकर सत्ता पक्ष के खिलाफ बयानबाजी कर रहे हैं, वहीं अब नगर पालिका के पूर्व पार्षद एवं जजपा के वरिष्ठ नेता पंकज मेहता ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि कुछ नेता और संगठन इस संवेदनशील मामले पर राजनीति करने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि इस समय जरूरत पीड़ति परिवारों की सहायता करने की है।

पंकज मेहता ने कहा कि जिन परिवारों के मकान या निर्माण हटाए गए हैं, उनके प्रति सभी को हमदर्दी दिखानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे समय में राजनीतिक लाभ लेने की बजाय सामाजिक सहयोग की भावना से आगे आना जरूरी है। उन्होंने कहा कि कस्बे में लगभग 40 प्रतिशत जगहों पर किसी न किसी प्रकार के कब्जे हैं और केवल इस मामले को लेकर माहौल खराब करना उचित नहीं है। उन्होंने विपक्षी नेताओं और विभिन्न सामाजिक संगठनों से अपील करते हुए कहा कि वे इस मुद्दे को ज्यादा हवा देकर भाईचारे को खराब करने का प्रयास न करें। उनका कहना था कि बवानीखेड़ा हमेशा से सामाजिक सौहार्द और भाईचारे के लिए जाना जाता रहा है और किसी भी परिस्थिति में आपसी एकता को कमजोर नहीं होने देना चाहिए। जजपा नेता ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति वास्तव में पीड़ति परिवारों के साथ खड़ा होना चाहता है तो उसे उनके मकान दोबारा बनवाने, आर्थिक सहायता देने और प्रशासन से राहत दिलाने के प्रयास करने चाहिए। केवल बयानबाजी करने से समस्या का समाधान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि समाज के सक्षम लोगों और संगठनों को आगे आकर प्रभावित परिवारों की मदद करनी चाहिए ताकि वे दोबारा अपने जीवन को सामान्य बना सकें।

भिवानी। आशियाना दिलाए जाने की मांग को लेकर धरने पर बैठे। *फोटो: हरिभूमि*

सामाजिक संगठनों ने उठाई गरीब परिवारों की आवाज

- बिजली-पानी, भोजन और पुनर्वास की मांग तेज, उपायुक्त ने डीएमसी को दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

कस्बा बवानीखेड़ा में गरीब मजदूर, किसान और पशुपालक परिवारों के टूटे आशियानों को लेकर जनआक्रोश लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्षों से मेहनत-मजदूरी और पशुपालन कर जीवनयापन करने वाले परिवार आज खुले आसमान के नीचे दिन-रात बिताने को मजबूर हैं। भीषण गर्मी के बीच महिलाएं, छोटे बच्चे और बुजुर्ग बेहद कठिन परिस्थितियों में जीवन गुजार रहे हैं। सिर छिपाने के लिए लगाए गए तंबू तक हटाए जाने के बाद अब कई परिवार काबली किकर के पेड़ के नीचे दिन-रात काटने को मजबूर हैं। लोगों में सबसे ज्यादा नाराजगी इस बात को लेकर है कि गरीबों के टूटे आशियानों पर इतनी सख्ती दिखाने वाला प्रशासन बड़े रसूखदारों के अवैध कब्जों पर कार्रवाई क्यों नहीं करता। लोगों का कहना है कि प्रशासन ने गरीब परिवारों को तो उजाड़ दिया, लेकिन अब तक उनके लिए मूलभूत सुविधाओं की कोई व्यवस्था नहीं की गई।

संवेदनहीन कदम

सामाजिक कार्यकर्ता उमेश भारद्वाज, पूर्व पार्षद मीना चौपड़ा, जिला पार्षद रेणू बाला और कामरेड राजेश कुगड़ ने संयुक्त बयान जारी करते हुए कहा कि गरीब परिवारों को बिना वैकल्पिक व्यवस्था के बेघर करना पूरी तरह अमानवीय और संवेदनहीन कदम है। उन्होंने कहा कि प्रशासन को तुरंत पीड़ित परिवारों के लिए बिजली, पानी, भोजन और अस्थायी रहने की व्यवस्था करनी चाहिए । उन्होंने कहा कि यह केवल मकानों का नहीं बल्कि गरीब परिवारों के सम्मान, सुरक्षा और अस्तित्व का सवाल है। वहीं भीम आर्मी नेता संतलाल अंबेडकर, कॉमरेड राजेश, मंजीत लांगायन, एडवोकेट राजेश सिंधु और एडवोकेट रामकिशन काजल ने भी संयुक्त बयान जारी कर प्रशासन और सरकार की कार्यप्रणाली पर तीखे सवाल उठाए।

विद्यार्थियों ने कार्ड से भावनाएं की प्रकट

- आईपीएस स्कूल बिरही कलां में मातृ दिवस मनाया

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

बीआर शिक्षण संस्था द्वारा संचालित आईपीएस स्कूल बिरही कलां में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य भावनात्मक एवं यादगार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रार्थना सभा में विद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी माताओं के प्रति प्रेम सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मनमोहक प्रस्तुतियां दीं।

विद्यालय परिसर में खुशी उत्साह और भावनाओं का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। इस अवसर पर माताओं के लिए विशेष रूप से अनेक मनोरंजक एवं प्रेरणादायक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें म्यूजिकल गेम्स डांस एक्टिविटी क्विज प्रतियोगिता एवं विभिन्न फन एक्टिविटीज शामिल रहीं। माताओं ने भी पूरे उत्साह के साथ भाग लेकर कार्यक्रम को यादगार बना दिया। बच्चों द्वारा अपनी माताओं के लिए व्यक्त किए गए प्रेम और सम्मान ने पूरे वातावरण को भावुक बना दिया। इस अवसर पर कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विद्यार्थियों ने अपने हाथों से सुंदर एवं भावनात्मक कार्ड बनाकर अपनी माताओं के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त किया। बच्चों की रचनात्मकता और भावनाओं से भरे संदेश सभी के आकर्षण का केंद्र रहे।

चरखी दादरी। समारोह में अभिभावकों को सम्मानित करते स्कूल प्रबंधक।

मां भविष्य की निर्माता

विद्यालय के प्रधानाचार्य सज्जन शर्मा ने कहा कि माँ केवल जन्म देने वाली नहीं बल्कि बच्चे के चरित्र संस्कार और भविष्य की निर्माता होती है। उन्होंने कहा कि माँ अपने बच्चों के लिए जीवनभर त्याग और समर्पण करती है तथा वही बच्चों को सच्चाई अनुशासन और मानवता का मार्ग दिखाती है।

पाठशाला के लिए पानी का करवाया कनेक्शन

- कम प्रेशर होने के कारण टंकी तक नहीं पहुंच पा रहा पानी
- मुख्य लाइन में नहीं दिया जा सकता कनेक्शन : सचिन

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा के ढाणी यादव स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय में लंबे समय से चल रही पानी की समस्या के समाधान की दिशा में जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा नया पानी कनेक्शन करवाया गया है। विद्यालय में पानी की कमी के कारण विद्यार्थियों और स्टाफ को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। अब विभाग की ओर से कनेक्शन दिए जाने के बाद विद्यालय प्रशासन ने राहत की सांस ली है। लेकिन पानी की स्पीड न होने व इसके टंकी तक न पहुंचने पर चिंता भी जताई है। स्टाफ सदस्यों ने कहा कि यदि पानी का प्रेशर सही बना रहता है तो विद्यालय की टंकी आसानी से भर जाएगी और दैनिक कार्यों में कोई बाधा नहीं आएगी। लेकिन पानी की स्पीड धीमी होने पर उन्होंने चिंता जताई। दूसरी तरफ इस बारे जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कनिष्ट अभियंता सचिन कौशिक ने बताया कि मुख्य लाइन में कनेक्शन नहीं दिया जा सकता। विद्यालय के लिए कनेक्शन करवा कर दिया गया है। यदि स्पीड धीमी है तो विद्यालय अपने स्तर पर प्रयास करे।

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के ढ़ाणी यादव स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय में पानी कनेक्शन करवाते हुए।

नियमित रूप से दी जाएगी सप्लाई

जन स्वास्थ्य विभाग के जेई सचिन कौशिक ने बताया कि विद्यालय में पहुंचे जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने पानी सप्लाई व्यवस्था का निरीक्षण भी किया। इस दौरान अधिकारियों ने बताया कि विद्यालय को एक दिन छोड़कर नियमित रूप से पानी की सप्लाई दी जाएगी, ताकि विद्यार्थियों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि भविष्य में भी विद्यालय में पानी की व्यवस्था सुचारू रखने का प्रयासन किया जाएगा। पानी विद्यालय खुले रहने के समय दी जाएगी ताकि स्टाफ पानी को संभालकर इसकी व्यवस्था कर सके।

मानवी चित्रा ने राष्ट्रीय स्कूल गेम्स में प्रदेश को दिलवाया गोल्ड मेडल

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

बलियाली की होनहार बेटी मानवी चित्रा ने रोहतक में हुए 69वें राष्ट्रीय स्कूल गेम्स की अंडर-17 गर्ल्स क्रिकेट टूर्नामेंट में प्रदेश को स्वर्ण पदक दिलवाया। मानवी ने न केवल अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया, बल्कि प्रदेश की टीम को खिताबी जीत दिलाकर प्रदेश का नाम देशभर में रोशन किया है। 29 अप्रैल से 3 मई तक चले प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में मानवी चित्रा ने अपने ऑलराउंड प्रदर्शन से सबको अचंभित कर दिया। शानदार खेल की बदौलत हरियाणा ने फाइनल मैच जीतकर स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। मानवी को उनके निर्णायक प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच के खिताब से नवाजा। मानवी कई बार बेस्ट फील्डर का खिताब भी जीत चुकी हैं।

खेल के मैदान में बलियाली की बेटी मानवी का जलवा, हजारों बेटियों के लिए बनी प्रेरणा

बलियाली की बेटी मानवी चित्रा।

पक्षी प्रकृति का शृंगार: जयभगवान

- पक्षी मेरे अतिथि' मुहिम के तहत शहीद राजकुमार स्कूल में सकोरे वितरित; बेजुबान परिंदों के लिए दाना-पानी का किया प्रबंध

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

बढ़ती गर्मी में बेजुबान पक्षियों को जीवनदान देने के लिए 'खुशियों की दीवार' संस्था द्वारा चलाई जा रही 'पक्षी मेरे अतिथि' मुहिम आज शहीद राजकुमार सीनियर सेकेंडरी स्कूल पहुंची।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से फेम जिला प्रधान जयभगवान मस्ताना, भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष नवीन रामनिवास सैनी, रामलीला कमेटी के प्रधान उमेद सिंह और प्रजापत समाज के प्रधान राजबीर सिंह के सानिध्य में दर्जनों सकोरे पक्षियों के दाना-पानी के लिए लगाए गए। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि लगातार बढ़ता तापमान और अंधाधुंध पेड़ों की कटाई ने पक्षियों के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया है। जहाँ पहले घने पेड़ों की छांव में पक्षी अपना बसेरा ढूंढ लेते थे, वहीं आज कंक्रीट के जंगलों और बढ़ती हीटवेव के कारण ये मासूम परिंदे प्यास और भूख से दम तोड़ रहे हैं। मुहिम में शामिल जयभगवान मस्ताना ने कहा कि पक्षी प्रकृति का शृंगार हैं। यदि हम आज सचेत नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियां इन परिंदों को सिर्फ किताबों में देखेंगी।

चरखी दादरी। शाहिद राजकुमार सीनियर सेकेंडरी स्कूल में परिंदों के लिए दाना पानी का प्रबंध करते हुए।

बालक को सभ्य नागरिक बनाने में मां का योगदान अतुलनीय: फौगाट

चरखी दादरी। शंकर कॉलोनी स्थित फर्स्ट स्टेयर प्ले स्कूल में मदर्स डे बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी माताओं के सम्मान में रंगारंग प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। बच्चों ने कविता, गीत, नृत्य एवं कार्ड मेकिंग गतिविधियों के माध्यम से मां के प्रति अपने प्रेम और सम्मान को व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय की मख्य शिक्षिका वन्दना शर्मा ने कहा कि मां बच्चे की पहली गुरु होती है और बच्चों के संस्कारों में मां की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों में पारिवारिक मूल्यों और सम्मान की भावना को मजबूत करते हैं। कार्यक्रम में उपस्थित कलावती हॉस्पीटल की डॉ. रस्मिता रजत फौगाट ने कहा कि मां का स्थान जीवन में सबसे ऊंचा होता है। विद्यालय निदेशक बलराज फौगाट ने कहा कि मां के त्याग, प्रेम और समर्पण को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने बच्चों को हमेशा अपने माता-पिता का सम्मान करने की प्रेरणा दी। मां बच्चे की पहली गुरु व सम्पूर्ण पाठशाला है। मां भावनाओं का समंदर है।

बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन

जीवन कौशल शिक्षा के विविध आयामों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी

हरिभूमि न्यूज ⏭बहल

बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में सीबीएसई के तत्वावधान में लाइफ स्किल्स (एडवांस) विषय पर क्षमता निर्माण कार्यशाला का सफल आयोजन महेंद्र चौधरी सभागार, विद्याग्राम परिसर में किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों में जीवन कौशल आधारित शिक्षण पद्धति को विकसित करना तथा विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए प्रभावी शैक्षिक वातावरण तैयार करना रहा।

शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में बीआरसीएम शिक्षण समिति के निदेशक डॉ. एस.के. सिन्हा, प्राचार्य राजेश कुमार झाझरिया, शिशुकुंज प्राचार्य संदीप टंडन ,उप-प्राचार्या सरस्वती दीक्षित एवं मुख्य रिसोर्स पर्सन मनीषा वालिया तथा नीलम शर्मा उपस्थित रहीं। कार्यशाला के दौरान रिकैपिटुलेटिंग अंडरस्टैंडिंग ऑफ लाइफ स्किल्स, एप्लीकेशन ऑफ लाइफ इन डे-टू-डे लाइफ, सिंथेसिस ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन विद प्रेजेंट डे स्कूल एजुकेशन, बिल्डिंग ब्लॉक्स तथा मेजरिंग लाइफ स्किल्स जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला की मुख्य रिसोर्स पर्सन मनीषा वालिया, प्राचार्या, मेगा माइंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, तोशाम तथा नीलम शर्मा, पीजीटी (बायोलॉजी), एमजीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रोहतक रहीं। दोनों विशेषज्ञों ने विभिन्न गतिविधियों, समूह चर्चाओं एवं प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से जीवन कौशल शिक्षा के विविध आयामों पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। उपस्थित शिक्षकों ने कार्यशाला को अत्यंत ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं व्यवहारिक बताते हुए इसकी सराहना की।

बहल। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक व बच्चे। *फोटो: हरिभूमि*

केवल शैक्षणिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं

इस अवसर पर बीआरसीएम शिक्षण समिति के निदेशक डॉ. एस.के. सिंहा ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल शैक्षणिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जीवन कौशल शिक्षा भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जीवन कौशल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल तथा सकारात्मक सोच विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शिक्षकों का आह्वान करते हुए कहा कि वे कक्षा शिक्षण में जीवन कौशल आधारित गतिविधियों को प्रभावी रूप से शामिल करें, ताकि विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकें।

विधवा ने लगाया मारपीट का आरोप

बहल। गोकलपुरा में विधवा महिला ने अपने सास-ससुर पर मारपीट, प्रताड़ना और जान से मारने की धमकी देने के गंभीर आरोप लगाए हैं। पुलिस ने शिकायत के आधार पर नामजदों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। गांव गोकलपुरा निवासी सुनील ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके पति विजय की वर्ष 2012 में सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। पति की मौत के बाद वह अपनी दो बेटियों के साथ गांव में ही अलग रह रही थी। महिला का आरोप है कि उसके सास-ससुर उसे बेवजह प्रताड़ित करते आ रहे हैं। महिला ने बताया कि 28 अप्रैल 2026 की सुबह उसके सास-ससुर ने घर की बिजली और पानी बंद कर दिया। इसके बाद उसकी सास और ससुर घर में घुस आए और गाली-गलौज करते हुए मारपीट की।

जयंती पर युवाओं से महाराणा प्रताप द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलने का आह्वान किया

महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की रक्षा के लिए जीवन में सब कुछ त्याग दिया

युवा शक्ति कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों और आत्मसम्मान से समझौता न करे : घनश्याम सर्राफ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित किए और लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप ऐसे महापुरुष थे। जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए जीवन में सब कुछ त्याग दिया। अंतिम समय तक मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ते रहे। उन्होंने युवाओं को महाराणा प्रताप द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलने का आहवान किया और कहा कि उस रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति को जीवन में कभी भी असफलता का मुख नहीं देखना पड़ता। सफलताएं उनके कदम चुमती है। वे हांसी गेट पर महाराणा प्रताप जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए महलों के सुख को त्याग कर जंगलों का कठिन जीवन चुना। उन्होंने घास की रोटियां खाना स्वीकार किया, लेकिन कभी भी विदेशी आक्रांताओं की गुलामी स्वीकार नहीं की। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों और आत्मसम्मान से समझौता नहीं करना चाहिए। महाराणा प्रताप के अभिन्न सहयोगी और प्रिय अश्व चेतक की वीरता का भी विशेष उल्लेख किया। हल्दीघाटी के युद्ध में चेतक ने अपनी अंतिम सांस तक अपने स्वामी की रक्षा की, जो आज भी दुनिया के लिए वफादारी और कर्तव्य के प्रति समर्पण का सबसे बड़ा उदाहरण है।

राष्ट्र सेवा जरूरी

इस मौके पर नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने युवाओं से कहा कि वे महाराणा प्रताप के आदर्शों को जीवन में ढाले और राष्ट्र सेवा में अपना जीवन लगाने का संकल्प ले। चूंकि महाराणा प्रताप ने ही विषम परिस्थितियों में स्वाभिमान को झुकने नहीं दिया था। किसी भी महापुरुष को जाति, वर्ग या किसी विशेष क्षेत्र की सीमाओं में बांधना उनके कद को छोटा करने जैसा है। उन्होंने आह्वान किया कि समाज को बांटने के बजाय, महापुरुषों के विचारों को अपनाकर एकजुट होना चाहिए।

भिवानी। महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

भिवानी। महाराणा प्रताप को नमन करती कांग्रेस की ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष रेणूबाला व अन्य।

भिवानी। महाराणा प्रताप को नमन करते जिला बार एसोसिएशन के प्रधान संदीप तंवर व अन्य अधिवक्ता।

वीर योद्धा महाराणा प्रताप ने लिखी वीरता की अलग परिभाषा: रेणूबाला

भिवानी। कांग्रेस की ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष रेणूबाला ने कहा कि महाराणा प्रताप ऐसे योद्धा हुए, जिन्होंने वीरता की नई परिभाषा लिखी थी। वीर योद्धा महाराणा प्रताप ने अपना स्वाभिमान बचाने के चलते मुगल शासकों के समक्ष कभी हार नहीं मानी। रेणूबाला शनिवार को वीर योद्धा महाराणा प्रताप की जयंती पर कस्बा बवानीखेड़ा में कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रही थी। उन्होंने महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप वो शक्ति थे, जिन्होंने सत्ता के सामने कभी सिर नहीं झुकाया। जब बड़े-बड़े राजे-महाराजे अपने स्वाभिमान बेच रहे थे, तब महाराणा प्रताप ने जंगलों में रहना स्वीकार किया, लेकिन गुलामी नहीं। उन्होंने कहा कि आज की राजनीति को महाराणा प्रताप जैसे जज्बे की जरूरत है, जहां कुर्सी नहीं, देश सबसे ऊपर हो। उन्होंने कहा कि नेता वो नहीं जो सत्ता के लिए समझौता करें, बल्कि वो जो जनता के लिए हर संघर्ष झेले। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप का जन्म महाराजा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कंवर के घर में हुआ था। उन्हें बचपन और युवावस्था में कीका नाम से पुकारा जाता था, ये नाम उन्हें भीलों से मिला था, जिनकी संगत में उन्होंने शुरुआती दिन बिताए थे। महाराणा प्रताप के पास चेतक नाम का एक घोड़ा था, जो उन्हें सबसे प्रिय था। 1576 में हुए जबरदस्त युद्ध में करीब 20 हजार सैनिकों के साथ महाराणा प्रताप ने 80 हजार मुगल सैनिकों का सामना किया। इस युद्ध में प्रताप का घोड़ा चेतक जख्मी हो गया था। इस युद्ध के बाद मेवाड़, चित्तौड़, गोगुंडा, कुंभलगढ़ व उदयपुर पर मुगलों का कब्जा हो गया था, लेकिन महाराणा ने कभी भी स्वाभिमान को नहीं छोड़ा। उन्होंने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष किया। 1596 में शिकार खेलते समय उन्हें चोट लगी, जिससे वह कभी उबर नहीं पाए। 19 जनवरी 1597 को सिर्फ 57 वर्ष आयु में चावड़ में उनका देहांत हो गया। उन्होंने कहा कि युवाओं को महाराणा प्रताप जैसे महापुरूषों के जीवन से संघर्ष एवं बलिदान की प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर नगर पालिका के वाइस चेयरमैन बजरंग तंवर, उमेश भारद्वाज, विनीत तंवर, नरेंद्र तंवर, पूर्व पार्षद राजबीर, पोनी पार्षद, बच्चन, रवि फौजी धावा, मास्टर रामफल आदि मौजूद रहे।

अधिवक्ताओं ने महाराणा प्रताप को नमन कर न्याय की रक्षा का लिया संकल्प

भिवानी। शनिवार को जिला बार सभागार में महान राष्ट्रभक्त और अदम्य साहस के प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती पर कार्यक्रम हुआ। जिला बार एसोसिएशन भिवानी और भाजपा लीगल सेल ने संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में अधिवक्ताओं ने शिरकत कर वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को श्रद्धासुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का शुभारंभ महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया। इस दौरान पूरा सभागार उनके जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

जिला बार एसोसिएशन के प्रधान अधिवक्ता संदीप तंवर व भाजपा लीगल सैल के जिलाध्यक्ष अधिवक्ता दिनेश वर्मा ने कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन हमें सिखाता है कि सत्य एवं स्वाभिमान के मार्ग पर चलते हुए कभी झुकना नहीं चाहिए। आज के दौर में अधिवक्ताओं की जिम्मेदारी और बढ़ गई है, हमारा संकल्प है कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाने का काम करेंगे। न्याय पालिका की मजबूती और आमजन का कानून में विश्वास बनाए रखना ही महाराणा प्रताप को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि उच्च आदर्श थे, जिन्होंने राष्ट्र की तरक्की एवं अखंडता के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। समारोह में सभी अधिवक्ताओं ने सामूहिक रूप से संकल्प लिया कि वे पेशेवर नैतिकता का पालन करेंगे, गरीबों एवं वंचितों को न्याय दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे और देश की एकता व अखंडता को बनाए रखने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। इस मौके पर जिला बार एसोसिएशन के सचिव विनोद भारद्वाज सहित अनेक अधिवक्ता मौजूद थे।

महाराणा प्रताप स्वाभिमान के अमर प्रतीक : कौशिक

भिवानी। भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अपनी वीरता और स्वाभिमान की अमिट छाप छोडने वाले महान योद्धा महाराणा प्रताप की जयंती भिवानी में उत्साह और गौरव के साथ मनाई गई। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने महाराणा प्रताप को नमन करते हुए उनके जीवन संघर्ष को राष्ट्रभक्ति की सर्वोच्च मिसाल बताया। जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने कहा कि महाराणा प्रताप केवल इतिहास का एक अध्याय मात्र नहीं हैं, बल्कि वे भारत के स्वाभिमान, साहस और राष्ट्रभक्ति की एक अमर पहचान हैं। आज के दौर में महाराणा प्रताप की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कौशिक ने कहा कि युवाओं को उनके जीवन से अनुशासन, संघर्ष और राष्ट्रप्रेम की सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रताप की सबसे बड़ी विरासत यह संदेश है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। महाराणा प्रताप जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों को अपने व्यक्तिगत जीवन में उतारें और एक सशक्त व समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

महाराणा प्रताप ने बताई थी वीरता की एक अलग परिभाषा : तंवर

बवानीखेड़ा। भाजपा वरिष्ठ नेता विनित तंवर ने कहा कि महाराणा प्रताप ऐसे योद्धा हुए, जिन्होंने वीरता की नई परिभाषा लिखी थी। वीर योद्धा महाराणा प्रताप ने अपना स्वाभिमान बचाने के चलते मुगल शासकों के समक्ष कभी हार नहीं मानी। उन्होंने महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप वो शक्ति थे, जिन्होंने सत्ता के सामने कभी सिर नहीं झुकाया। जब बड़े-बड़े राजे-महाराजे अपने स्वाभिमान बेच रहे थे, तब महाराणा प्रताप ने जंगलों में रहना स्वीकार किया, लेकिन गुलामी नहीं। उन्होंने कहा कि आज की राजनीति को प्रताप जैसे जज्बे की जरूरत है, जहां कुर्सी नहीं, देश सबसे ऊपर हो। उन्होंने कहा कि नेता वो नहीं जो सत्ता के लिए समझौता करे, बल्कि वो जो जनता के लिए हर संघर्ष झेले। इस अवसर पर उनके साथ अनेक मौजूद रहे।

वीरता, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति के प्रतीक थे महाराणा प्रताप

भिवानी। वीरता, स्वाभिमान एवं राष्ट्रभक्ति के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर शनिवार को महाराणा प्रताप चौक पर प्रेरणादायी कार्यक्रम हुआ। इस आयोजन में सर्वसमाज के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर महाराणा प्रताप को श्रद्धापूर्वक नमन किया। कार्यक्रम का आयोजन सर्वसमाज भिवानी ने किया, जिसका नेतृत्व सामाजिक कार्यकर्ता नेत्रपाल भिवानी एवं उनके साथियों ने किया। कार्यक्रम स्थल को विशेष रूप से मालाओं, चुनरियों एवं रंग-बिरंगे गुब्बारों से आकर्षक रूप में सजाया गया था। सुबह से ही महाराणा प्रताप चौक पर श्रद्धालुओं और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों का पहुंचना शुरू हो गया था। सबसे पहले वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। महाराणा प्रताप के प्रिय अश्व चेतक की प्रतिमा को भी मालाओं से सजाकर सम्मान प्रकट किया। पूरे वातावरण में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप अमर रहे और जय राजपूताना के जयघोष गूंजते रहे, जिससे माहौल राष्ट्रभक्ति और गौरव की भावना से भर गया। इस मौके पर भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मबीर सिहं के प्रतिनिधि एवं उनके बेटे मोहित चौधरी व भिवानी नगर परिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि राहुल राणा ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने महाराणा प्रताप के संघर्ष एवं बलिदान को युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बताया।

भिवानी। महाराणा प्रताप को नमन करते सर्वसमाज के लोग।

भिवानी। महाराणा के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

युवा महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेकर करें राष्ट्र सेवा

भिवानी। धानक जनकल्याण मंच हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष संदीप खरकिया ने कहा कि वीर योद्धा संत शिरोमणि महाराणा प्रताप महान योद्धा हुए हैं युवाओं को उनके मार्ग पर चलकर उनकी नीतियों का अनुसरण करना चाहिए आज गांव खरक कला में सर्व समाज के युवाओं के द्वारा महाराणा प्रताप जयंती का आयोजन कर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलदीप परमार ने की इस मौके पर संदीप खरकिया ने कहा कि आज हम यहां मेवाड़ के सूर्य, हिंदू धर्म के गौरव, स्वाभिमान और संघर्ष के प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती मनाने के लिए एकत्र हुए हैं। इस मौके पर जतिन राणा, पंकज राणा, अमित परमार, मोनू वशिष्ठ पंच, देव खरकिया, दीपक परमार, राजू शर्मा, नवीन सोनी, लाल परमार, सचिन परमार, साहिल यादव, रविंद्र खरकिया, वीरेंद्र वाल्मीकि, निखिल नंदा, प्रवीण गर्ग, पवन शर्मा, डीपी तंवर, प्रियाकांत सेन, राजेश पहलवान, अजय शर्मा, सुरेश जांगड़ा, विक्रम रोहिल्ला, आदि युवा सर्व समाज के लोग मौजूद थे।

भाजपाईयों ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को किया याद

भिवानी। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर भाजपाईयों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। भाजपा नेता रीतिक वधवा ने कहा कि अदम्य साहस, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के अमर प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन किया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता, आत्म सम्मान एवं त्याग के सर्वोच्च प्रेरणास्रोत हैं। वधवा ने कहा कि जीवन का प्रत्येक क्षण मातृभूमि, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा एवं इनके स्वाभिमान की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप का अद्वितीय शौर्य और मातृभूमि के प्रति उनका समर्पण आज भी प्रत्येक भारतीय के हृदय में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रज्ज्वलित करता है। इस अवसर पर किसान मोर्चा पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक तिगड़ी , अजीत तिगड़ी भूपेंद्र सेन तिगड़ी , निरंजन सिंह ने भी वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

हरियाणा जनसेवा संगठन ने जयंती पर महाराणा प्रताप को किया नमन

भिवानी। हरियाणा जनसेवा संगठन द्वारा वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में संजय चौहान बलियाली, हल्का बवानी खेड़ा अध्यक्ष हरियाणा जनसेवा संगठन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप केवल एक वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि स्वाभिमान, त्याग और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक थे। उनका जीवन हमें अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने और समाज व देश के लिए समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को महाराणा प्रताप के आदर्शों को अपनाकर समाज में भाईचारा, एकता और सेवा की भावना को मजबूत करना चाहिए। हरियाणा जनसेवा संगठन हमेशा समाजहित और जनसेवा के कार्यों के लिए समर्पित रहेगा। संजय चौहान बलियाली ने कहा कि महाराणा प्रताप का संघर्ष हमें यह सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी अपने सम्मान और सत्य के मार्ग से पीछे नहीं हटना चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने महाराणा प्रताप अमर रहें के जयघोष लगाए और उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सैं.मी 10X 8 सैं.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

वाद निपटाए

जिला मुख्यालय के अलावा तोशाम, सिवानी व लोहारू भी लगी लोक अदालत

मोटर वाहन दुर्घटना, पारिवारिक मामले, चालान, बैंक ऋण आदि का हुआ निपटारा

राष्ट्रीय लोक अदालत में 11476 केसों का किया निपटान : सीजेएम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हरियाणा राज्य विधिक सेवायें प्राधिकरण के आदेशानुसार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन व जिला एवं सत्र न्यायाधीश डीआर. चालिया के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम पवन कुमार ने बताया कि शनिवार को जिला मुख्यालय के अलावा तोशाम, सिवानी व लोहारू न्यायिक परिसर में भी इस वर्ष की दुसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया।

सीजेएम पवन कुमार ने बताया कि लोक अदालत वैकल्पिक विवाद समाधान की एक प्रणाली है जो भारत में बदलते समय के साथ एक प्रणाली के रूप में स्थापित हुई है। लोक अदालतें न केवल लंबित विवाद या पार्टियों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को सुलझाती हैं, बल्कि यह सामाजिक सद्भाव को भी सुनिश्चित करती है क्योंकि विवाद करने वाले पक्ष अपने मामलों को अपनी पूर्ण संतुष्टि के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाते हैं। इससे अदालतों के लंबित मामलों में कमी आती है, क्योंकि अपील और संशोधन के रूप में आगे की कार्यवाही को भी समाप्त कर पक्षों की सहमति से मामलों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जाता है और त्वरित और प्रभावी तरीके से न्याय दिलाने के लिए उन्हें उपलब्ध कराया जाता है। विवाद के निपटारे के अलावा, पक्षकारों को मामलों की उनके द्वारा भुगतान की गई अदालती फीस की वापसी का लाभ होता है।

भिवानी। राष्ट्रीय लोक अदालत में केसों की सुनवाई करते हुए। फोटो : हरिभूमि

लोहारू में 70 में से 43 मामले निपटाए

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी पवनकुमार ने कहा कि लोक अदालत में अपराधिक मोटर वाहन दुर्घटना, पारिवारिक मामले, चालान, बैंक ऋण, दीवानी मामले, चेक बाउंस, राजस्व आदि से संबंधित मामले रखे गए। उन्होंने बताया इस आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में भिवानी की लोक अदालत में रखे गए कुल 27173 में से 11476 मामलों का निपटारा गया तथा 38757457 रुपये की कुल राशि का निपटान किया गया। जो कि लोहारू में 70 में से 43, तोशाम में 72 में से 29, सिवानी में 65 में से 37 मामलों का मौके पर ही निपटारा किया गया। इस दौरान प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने बताया कि जिला मुख्यालय पर अतिरिक्त प्रिंसिपल जज फैमिली कोर्ट भिवानी रुपम, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश आशीष कुमार शर्मा, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी मीता कोहली, सिविल जज जूनियर डिवीजन भिवानी हरजोत कौर आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत में निपटाए मामले

चरखी दादरी। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में शनिवार को दादरी न्यायिक परिसर में साल 2026 की दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया किया गया। इस लोक अदालत में आम नागरिकों द्वारा आपसी सुलह और समझौते के आधार पर स्वयं अथवा अपने अधिवक्ताओं के माध्यम से मामलों का निपटारा किया गया। इस लोक अदालत में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सतीश कुमार, एसीजेएम परवीन, जेएमआईसी लक्ष्य गर्ग, जेएमआईसी अनु, ने मामलों की सुनवाई की। राष्ट्रीय लोक अदालत में वाहन दुर्घटना अधिनियम, बैंक लोन, मोटर व्हीकल एक्सीडेंट, एनडीपीएस एक्ट, फौजदारी, दीवानी, चेक बाउंस, वैवाहिक मामलों की सुनवाई की गई। कोर्ट केसों के साथ-साथ बैंक रिकवरी, वाटर बिल तथा बिजली से संबंधित मामलों की भी इस लोक अदालत में सुनवाई की गई। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में नौ हजार दो सौ छिहत्तर मामले अदालत में सुनवाई के लिए रखे गए। जिसमें से 6 हजार 573 मामलों का मौके पर निपटारा कर दिया गया तथा 3 करोड़ 17 लाख की राशि अवॉर्ड के रूप में पास की गई। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव संजीव काजला ने बताया कि लोक अदालत का उद्देश्य केसों का निपटारा लोगों की आपसी सहमति से करना है।

शिक्षा संस्कार चरित्र निर्माण
आर्यन कोचिंग
स्याई एकेडमी (विश्वास का दूसरा नाम)
12वीं के बाद सरकारी नौकरी
नया बैच आरम्भ
अग्निवीर SSC रेलवे
हरियाणा पुलिस हरियाणा ग्रुप-डी CET
AIRFORCE NAVY ARMY
पता : बस स्टैंड के पास, चरखी दादरी
9050035973, 9812611926

मातृ दिवस विशेष

मां की ममता, उसके प्रेम, उसके समर्पण और उसके त्याग की कोई सीमा नहीं होती है। हर हाल में अपनी संतान का हित, उसके सुख और उसकी खुशी की कामना करने वाली मां की महानता का कितना भी बखान किया जाए कम ही होगा। आइए आज मातृ दिवस के अवसर पर हम सब संकल्प करें कि अपनी मां को हमेशा खुश रखेंगे, उनकी हर इच्छा को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

आवरण कथा
सरस्वती रमेश

मां त्याग-प्रेम की मूरत है सबसे अनमोल

प्रकृति की हर कृति अपने आप में अनूठी और अनमोल है। लेकिन मां की बात ही कुछ अलग है। मां को प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। मां की ममता के समक्ष दुनिया के सारे ऐशो-आराम, स्वर्गीय सुख, चमक-दमक फीके हैं। मां के स्नेह में, ममता में जो सुख, तृप्ति और सुकून होता है, उसे दुनिया की कोई शय नहीं दे सकती। इसीलिए उस शख्स को दुनिया में सबसे खुशनसीब माना जाता है, जिसके सिर पर मां की ममता का साया होता है। सच कहें तो मां की उपस्थिति, स्वर्ग से भी अधिक आलौकिक अनुभूति देती है। मां की इस दिव्यता को, विशेषता को मुनव्वर राणा ने अपने एक शेर में यूं समेटा है-

चलती-फिरती हुई आंखों से अजां देखी है
मैंने जन्नत तो नहीं देखी है, मां देखी है।

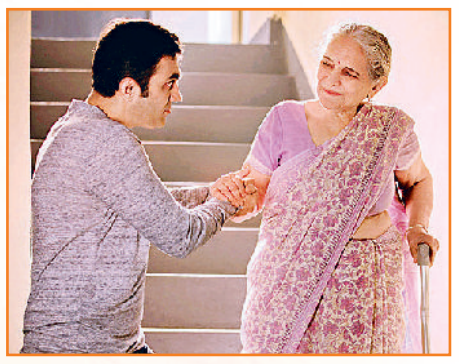

भावनाओं का दरिया है मां: हर मां के हृदय में भावनाओं का दरिया उमड़ता रहता है। यही भावनाएं मां और उसकी संतान के मध्य अनिर्वचनीय रिश्ता कायम करती हैं। एक ऐसा रिश्ता, जिसमें संसार के सभी रिश्तों की तासीर को महसूस किया जा सकता है। एक मां की उसके संतान के प्रति जैसी तड़प, प्रेम, चिंता, समर्पण और त्याग की भावना होती है, ऐसी भावना किसी और रिश्ते-नाते में नहीं देखी जा सकती है। मां अपने बच्चे की सिर्फ जन्मदात्री नहीं होती। वह उसकी प्रथम गुरु, संरक्षक, दोस्त, पालनकर्ता और मार्गदर्शक भी होती है। एक बच्चे को अपनी मां से वह सब कुछ मिलता है, जिसकी उसे वर्तमान में जरूरत है और भविष्य में जरूरत पड़ने की संभावना होती है। वैसे तो बच्चे के इर्द-गिर्द ढेर सारे संबंधों की कतार होती है। लेकिन अपनी मां से उसे जो प्राप्त होता है, उसकी भरपाई दुनिया का कोई भी रिश्ता नहीं कर सकता। नेल्सन मंडेला के शब्दों में कहें तो, 'मां का प्यार सबसे ऊंचा, अशेष और अनपेक्षित होता है।'

रुई के फाहे सा स्नेह: मां का प्यार, उसका स्नेह रुई के फाहे जैसा मुलायम और निर्दोष होता है। वह बच्चे की जरा-सी चोट पर विह्वल होने लगता है। बच्चे को जरा सी भी तकलीफ हो तो मां का मन विचलित होने लगता है। उसका प्यार देखना हो तो उसकी चिंताओं को गौर से देखिए। बच्चे की हर पल की जरूरतों के लिए मां किस हद तक फिक्रमंद होती है। उसकी दिनचर्या का निर्धारण बच्चे की जरूरतों के हिसाब से तय होता है। यहां तक कि उसके सोने-जागने का भी। एक लड़कोरी (नवजात की मां) की नींद कभी पूरी नहीं हो पाती। वो टुकड़ों-टुकड़ों में सोती हैं। बच्चे की रोने की एक आवाज पर अपने खाने की थाली सरका कर उसे पहले दूध पिलाती है। बीमार बच्चे की देख-रेख करने में तो मां अपनी भूख, प्यास, नींद तक बिसरा देती है।

कामयाबी के पीछे मां की भूमिका: किसी इंसान की कामयाबी में उसकी मां की भी भूमिका होती है। ज्यादातर सफल और महान लोगों की कामयाबी के पीछे उनकी मांओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दुनिया में ऐसे बेशुमार उदाहरण हैं। अमेरिका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने संस्मरण में अपनी मां की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में लिखा है,'मेरी मां ने मुझे शिक्षित करने और मेरे भीतर आत्मविश्वास भरने के लिए बहुत मेहनत की। दिन में वह काम पर जाती थीं, इसलिए भोर में चार बजे उठकर मुझे पढ़ाती थीं। हमारी जिंदगी के तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद, मेरी मां ने मुझे हर पल खास महसूस कराया।' ऐसा ही एक और उदाहरण महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन के जीवन में भी देखा जा सकता है। उनके महान आविष्कार को सारी दुनिया जानती है। मगर बहुत कम लोगों को पता होगा कि जब वह छोटे थे, तो आम बच्चों की तरह समझदार नहीं थे। उनके अध्यापक उन्हें हमेशा मंदबुद्धि कहते थे। जब उनकी मां, नैंसी को यह बात पता लगी तो वो उन्हें स्कूल से निकाल लाईं और घर पर ही पढ़ाने लगीं। कई साल बाद एडिसन ने अपनी डायरी में लिखा, 'मेरी मां ने ही मुझे बनाया। वह बहुत सच्ची थीं। मुझ पर अथाह भरोसा करती थीं। उनके स्नेह को पाकर मुझे लगा कि मेरे पास भी जीने की कोई वजह है। उन्हें मैं निराश नहीं कर सकता था।'

एक मंदबुद्धि बच्चा एक मां के संकल्प, हौसले और स्नेह की बदौलत उस सदी का जीनियस बन गया। उस मां ने अपने मंदबुद्धि बेटे से घृणा नहीं की। उससे प्रेम किया और उस पर विश्वास किया। मां के स्नेह और विश्वास में चमत्कारिक शक्ति होती है, जो संतान के जीवन को संवार देती है। कामयाबी की ऐसी लाखों कहानियां हैं, जिनके पीछे एक मां का यही विश्वास और अथाह प्रेम है।

मां कभी नहीं बदलती: दुनिया पल-पल बदलती रहती है, लेकिन मां जैसी सदियों पहले हुआ करती थीं, अब भी वैसी ही होती हैं। यानी सदियां गुजर गईं लेकिन अपनी संतान के प्रति मां का प्यार, लगाव और समर्पण बरकरार है। अपने बच्चों को सीने से लगाने वाली, आंचल में सहेजने वाली, उनकी सुरक्षा के लिए ढाल बन जाने वाली और उनकी हर गलती को क्षमा कर देने वाली मां की ममता का मोल नहीं है। लेकिन दुःखद है कि आधुनिकता, स्वार्थी सोच के प्रभाव में कई संतानों का व्यवहार अपनी मां प्रति बदल जाता है।

सोचने वाली बात है कि आखिर जब सदियों में मांओं का अपनी संतान से जुड़ाव नहीं बदला तो संतानों का व्यवहार मां के प्रति क्यों बदल गया? ऐसा क्या हो गया कि सभ्यता के विकास ने हमें ऐसी तहजीब सिखाई, जिसने मां का सम्मान करना भुला दिया? दरअसल, सच यह है कि विकास की चकाचौंध में हम निहायत आत्मकेंद्रित और स्वार्थी होते गए हैं। हम मां की ममता जैसे अमूल्य भाव का सम्मान करना भी भूल गए।

मदर्स-डे की महत्ता: संतोष की बात है कि हमारी इस गलती का एहसास कराने के लिए, जीवन में अपनी मां की महत्ता को याद दिलाने के लिए वर्ष में एक दिन मुकर्रर किया गया है। जिसे हम मदर्स-डे के नाम से मनाते हैं। हालांकि मां अपने बच्चों से हर दिन प्रेम, सम्मान व आत्मीयता की हकदार है। बुढ़ापे में जब उसकी हड्डियां कमजोर पड़ जाती हैं, नजर धुंधली हो जाती है और हाथ कांपने लगते हैं, तब उसे अपने बच्चों का साथ व सहारे की जरूरत होती है। ऐसे में मदर्स-डे हमें 'मां' की उस अमूल्य ममता की याद दिलाता हैं। तो आज मदर्स-डे मनाते हुए हम जरूर संकल्प करें कि हम मां को भरपूर प्यार सम्मान न केवल आज, हर दिन देंगे। उसके चेहरे पर मुस्कान लाने का हर संभव प्रयास करेंगे। *

अनुभूति / डॉ. ऋतु सारस्वत

मां के नाम बेटे की पाती

मां अपने बच्चों को केवल पालती-पोसती ही नहीं, बहुत सरल-सहज तरीके से उसके भीतर संस्कारों के बीज भी रोप देती है। इसका एहसास कई बार वर्षों बाद बच्चे को होता है। अपनी मां के प्रति एक बेटा ऐसी ही भावानुभूतियां पत्र के जरिए यहां व्यक्त कर रहा है।

मेरी प्यारी मां

जीवन में पहली बार आपको कुछ लिखकर भेज रहा हूं। सच कहूं तो समझ में नहीं आ रहा कि कहां से शुरुआत करूं? न जाने कितनी बार लिखा और मिटाया है, हर बार लगता है कि मेरे पास कहने के लिए हजारों शब्द हैं, पर उन्हें एक-दूसरे से जोड़ ही नहीं पा रहा। पता है मां, आज मैं बाजार गया था। पढ़ते-पढ़ते थक गया था, सोचा यूं ही थोड़ा घूम लूं। तभी मेरी नजर एक दुकान में रखे बिंदी के छोटे से पैकेट पर पड़ी और मैंने बिना कुछ सोचे ढेर सारी बिंदियां खरीद लीं। जैसे ही उन्हें हाथों में लिया, यूं महसूस हुआ जैसे आपके ममतामयी हाथ मुझे स्पर्श कर रहे हों। आपकी मुस्कुराहट मेरी आंखों के सामने घूमने लगी और मन किया कि दौड़कर आऊं और आपको जोर से गले लगा लूं। मां , आपकी बहुत याद आ रही है। मां, मुझे आज भी याद है, जब भी आप कहीं बाहर से लौटकर घर आती थीं, तो मैं दौड़कर आपकी गोद में चढ़ जाता था। सबसे पहले आपके माथे से आपकी बिंदी उतार देता था। आप हैरान होकर पूछती थीं- 'बेटा, ऐसा क्यों करते हो?' मैं मासूमियत से कह देता था- 'अगर आपके माथे पर बिंदी लगी रही, तो आप फिर से बाहर चली जाओगी' आप मुस्कुरा देती थीं। मैं आपके और करीब सिमट जाता था। पर मां, बिंदी की यह कहानी यहीं तक नहीं थी। एक दिन मैं बहुत गुस्से में स्कूल से घर लौटा था, क्योंकि मेरी गलती न होने पर भी मेरी टीचर ने मुझे बहुत डांटा था। गुस्से में मैंने कह दिया, 'मेरी टीचर बहुत गंदी है' आपने तुरंत मुझे रोका और समझाया कि बड़ों के लिए ऐसे शब्द नहीं बोलते। फिर आपने मुस्कुराकर कहा, 'और अगर शिकायत करनी भी है, तो कम से कम 'बिंदी' तो लगा लो ' आपकी यह बात सुनकर मैं टकटकी लगाकर आपको देखने लगा और मासूमियत से पूछ बैठा, 'तो क्या मां, मुझे किसी की शिकायत करने के लिए खुद बिंदी लगानी होगी?' आप मेरी बात सुनकर हंस-हंसकर लोट-पोट हो गईं और फिर बोलीं, 'अरे बुद्धू, मैं तुम्हें बिंदी लगाने के लिए नहीं कह रही और तुम बिंदी लगाओगे भी कैसे, तुम तो अभी छोटे से बच्चे हो।' मैंने भी तुरंत कहा, 'मां, मैं छोटा तो हूं ही पर मैं तो लड़का हूं, मैं बिंदी कैसे लगा सकता हूं!' मेरी यह बात सुनकर आप फिर जोर-जोर से हंसने लगीं और मैं थोड़ा खिसियाकर बोला, 'मां, प्लीज बताओ ना' तब आपने बड़े प्यार से समझाया, 'देखो, 'है' के ऊपर जब बिंदी लगती है, तो वह 'हैं' बन जाता है, और बड़ों के लिए हमेशा हमें सम्मानजनक शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। 'वह आ रही है' हम अपने किसी दोस्त के लिए कह सकते हैं, लेकिन अगर किसी बड़े के लिए कहना हो, तो हमें कहना चाहिए 'वह आ रही हैं।' और ऐसे ही न जाने आपने मुझे कितने उदाहरण देकर समझाया।

मां, पता नहीं आपके शब्दों में क्या जादू था कि उसके बाद मैं कभी यह 'बिंदी' लगाना भूल ही नहीं पाया। मेरी हर बात में, हर संबोधन में अनजाने में ही वह सम्मान जुड़ता चला गया। आपकी यह 'बिंदी' सच में कमाल की है। मां ,यह मुझे बहुत बार बिल्कुल अजनबियों के भी करीब ले आती है। हमारे कॉलेज के चौकीदार भैया हों या कमरे में सफाई करने वाली आंटी जब भी मैं उनसे आदर से बात करता हूं, उनके चेहरे पर जो मुस्कुराहट आती है, वह मेरे मन को एक अलग ही सुकून देती है। एक दिन आंटी ने कहा, 'भैया, आप बहुत अच्छे हैं' और उनके ये शब्द सुनकर मुझे ऐसा लगा जैसे तेज गर्मी में अचानक बारिश हो गई हो। मां, मैं बहुत दिनों से आपको यह बताना चाह रहा था कि आपकी यह 'बिंदी' सचमुच बहुत अच्छी है पर कभी मौका ही नहीं मिला। आज जब इस बिंदी के छोटे से पैकेट को हाथ में लिया, तो लगा जैसे किसी ने मेरे हाथ में कलम थमा दी हो और जो बातें इतने दिनों से मन में थीं, वे अपने आप शब्द बनकर बहने लगीं। मां, सच कहूं आपकी यह 'बिंदी' सिर्फ आपके माथे पर लगकर आपको सुंदर नहीं बनाती बल्कि यह मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत संस्कार बन गई है, जो हर रोज मुझे एक बेहतर इंसान बनने की राह दिखाती है।

थैंक यू सो मच मां!

-आपका बेटा

गजल / डॉ. ओम निश्चल

मां का प्यार

तुम से लिपट कर सो जाऊं मां
तो दुनिया का सुख पाऊं मां।
गोद तुम्हारी ममता का गढ़
कैसे इसको झुठलाऊं मां।
पुलकित दृष्टि तुम्हारी देखूं
आंखों में ही खो जाऊं मां।
चुपके-चुपके जो गाती हो
उस रुनझुन पर बलि जाऊं मां।
मां का प्यार अलौकिक होता
किस-किस को यह बतलाऊं मां।
मुझे छुपा लो अब आंचल में
इसी सृष्टि में रम जाऊं मां।

लघुकथाएं

एआई इमेज

स्वाद मां के हाथों का

मां के हाथ के गट्टे की सब्जी का जवाब ही नहीं!' मुंह में एक कौर डालते हुए शोभा के पति राकेश बोल पड़े।

'मैं कितना भी अच्छा खाना बना लूं, पर पता नहीं क्यों इनके मुंह से मेरी प्रशंसा के एक शब्द भी नहीं निकलते?' यह सोचकर शोभा के मन में कहीं ना कहीं अपनी सासू मां के प्रति ईर्ष्या के भाव बने रहते। उसकी सासू मां इन बातों से अनभिज्ञ आए दिन अपने बेटे के लिए नए-नए पकवान बनाती रहतीं। एक बार शोभा के पिताजी की तबियत ज्यादा खराब हो गई। आनन-फानन में वह मायके चली गई। अपने आठ वर्षीय बेटे को भी साथ नहीं ले जा पाई, क्योंकि उसके एग्जाम चल रहे थे। करीब दस दिन वह अपने मायके में रही। पिताजी की तबियत में सुधार होते ही वह अपने घर लौट आई। जैसे ही वह घर आई, उसका बेटा उससे लिपट गया और बड़ी ही मासूमियत से बोला, 'मम्मा आप इतने दिनों के लिए क्यों चली गई थीं? मुझे दादी के हाथ का खाना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था।' 'वो क्या है न बहू, बच्चों को अपने मां का हाथ का खाना ही अच्छा लगता है, क्योंकि बच्चा शुरू से ही अपनी मां के हाथ का खाना ज्यादा खाता है। इसलिए उसके मुंह में वहीं स्वाद चढ़ जाता है। इसके अलावा मां का स्नेह और अपनापन भी तो उस खाने में शामिल होता है।' उसकी सासू मां ने सहज स्वर में कहा। 'इतनी छोटी-सी बात वह कैसे नहीं समझ पाई और बेवजह मां-बेटे से हमेशा चिढ़ती रही।' शोभा मन ही मन में बोली। शोभा के पति उसकी भाव-भंगिमा देखकर उसके अंदर चल रहे भावों को भांप गए। इसलिए उसे देखकर मुस्कुराते हुए बोले, 'तुम भी बहुत अच्छा खाना बनाती हो, वो तो मैं तुम्हें चिढ़ाने के लिए तुम्हारे सामने मां की तारीफ करता रहता हूं।' 'अच्छा...जाइए मैं आपसे बात नहीं करूंगी।' कहकर वह गुस्से में अपने कमरे में चली गई। इस पर राकेश भी उसे मनाने के लिए उसके पीछे-पीछे कमरे में पहुंच गए। *

-शीला श्रीवास्तव

पैसे हैं पर मां नहीं

साहब, मेरी पासबुक देखकर बताइए, क्या खाते में पैसे आए हैं?' बूढ़ी महिला ने गिड़गिड़ाते हुए बैंक क्लर्क प्रमोद से विनती की। 'मांजी, आप से कितनी बार कहा कि आपके खाते में बैलेंस ही नहीं है!' प्रमोद झुंझला कर बोला। 'साहब, मैं बहुत गरीब हूं। खाने-पीने के भी पैसे नहीं हैं। मेरा बेटा हर महीने मुझे तीन हजार रुपए भेजता है।' बूढ़ी औरत रोते हुए बोली। 'भेजता रहा होगा, लेकिन पिछले तीन महीनों से उसने एक भी रुपया नहीं भेजा है, माता जी। मैं आपको पैसे कहां से दे दूं?' प्रमोद झल्लाते हुए बोला। उसकी तेज आवाज सुनकर मैनेजर रूपांग मेहता ने अपने केबिन से बाहर आकर पूछा, 'क्या बात है प्रमोद, मांजी को क्या परेशानी है?' 'सर, ये मांजी रोज आकर बैलेंस चेक करने को कहती हैं। इनके खाते में पैसा ही नहीं है, मैं क्या करूं?' प्रमोद ने जवाब दिया। मेहता साहब ने बूढ़ी महिला की ओर देखा। लगभग सत्तर साल की उस महिला की फटी साड़ी, टूटा चश्मा और हाथ में लाठी, उनकी गरीबी को बयां कर रही थी। 'मांजी, आप रोज क्यों आती हैं?' मेहता साहब ने पूछा। वह बूढ़ी महिला बोली, 'मेरा नाम सविता है साहब। दस साल पहले मेरे पति की शराब पीने की वजह से मौत हो गई थी। मैंने चार घरों में काम करके अपने बेटे मयंक को पढ़ाया और उसे कंप्यूटर इंजीनियर बनाया। पिछले साल उसकी शादी हुई और अब वह बेंगलुरु में नौकरी करता है। वह हर महीने तीन हजार रुपए भेजता था, लेकिन तीन महीने से खाते में पैसे आ ही नहीं रहे है। लगता है शायद पैसे गलती से किसी और खाते में जा रहे होंगे। मेरे पास दवा और खाने के भी पैसे नहीं हैं। आंखों में भी मोतियाबिंद है, काम भी नहीं हो पाता।' यह कहते हुए सविता रो पड़ी। मेहता साहब का दिल भर आया। उन्होंने पूछा, 'क्या आप के पास बेटे का नंबर है?' सविता ने एक मुड़ा-तुड़ा कागज उनकी ओर बढ़ा दिया। मेहता साहब ने उस नंबर पर फोन लगाया। दूसरी ओर से फोन उठा तो वह बोले, 'हैलो, मयंक से बात करवा दीजिए।' दूसरी तरफ से किसी महिला ने पूछा, 'मैं उनकी पत्नी माया बोल रही हूं, मयंक बाहर गए हैं। आप कौन बोल रहे हैं?' 'मैं बिलासपुर से बैंक मैनेजर रूपांग मेहता बोल रहा हूं। आपकी सास यहां आई हुई हैं, मयंक ने तीन महीने से उन्हें पैसे नहीं भेजे क्या?' 'अरे सर, कब तक पैसे भेजते रहेंगे उनको? हमारी भी जरूरतें हैं। हम लोग सिंगापुर घूमने का प्लान बना रहे हैं।' माया ने बेरुखी से कहा। 'लेकिन मांजी के पास खाने और दवा के पैसे भी नहीं हैं!' मेहता साहब थोड़ा तल्खी से बोले। 'तो हम क्या करें? क्या हमने उनका ठेका ले रखा है? कहीं भी चली जाएं, किसी वृद्धाश्रम में क्यों नहीं चली जातीं?' इतना कहकर माया ने फोन काट दिया। यह सुनकर मेहता साहब स्तब्ध रह गए। कैसे बेटे-बहू हैं? उन्होंने माताजी से बिना कुछ कहे अपने खाते से तीन हजार रुपए निकाले और सविता को देते हुए कहा, 'लो मांजी, आपके बेटे ने पैसे भेज दिए हैं।' सविता की आंखों में खुशी के आंसू छलक उठे, 'भगवान आप का भला करे।' कह कर वह रो पड़ी। 'अब आप का बेटा हर महीने पैसे भेजेगा।' मेहता साहब बोले। सविता खुश होकर चली गई। उनके जाने के बाद प्रमोद ने आश्चर्य से पूछा, 'सर, आपने अपने पास से पैसे दे दिए?' मेहता साहब भावुक होकर बोले, 'मैं भी गरीब परिवार से हूं। मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरी मां ने मजदूरी करके मुझे पढ़ाया। मैं सोचता था कि जब पैसे कमाऊंगा तो मां के सारे सपने पूरे करूंगा। लेकिन सात साल पहले जब मेरी नौकरी लगी तभी मेरी मां चल बसीं। जब मां थी, तब पैसे नहीं थे और आज पैसे हैं, पर मां नहीं हैं। इसीलिए इस मां की बेबसी मुझसे देखी नहीं गई।' *

-वीरेंद्र बहादुर सिंह

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

ताकि बचा रहे आदमीपन

हाल में युवा कवयित्री रूपम मिश्र का दूसरा कविता संग्रह 'हंसी और देस' प्रकाशित होकर आया है। ये कविताएं हमारे समय, समाज और देश की तमाम स्याह-श्वेत छवियां उजागर करती हैं। देशज भाषा के रचाव और लोकजीवन के राग ने इन कविताओं के निहितार्थ को और भी प्रभावी बना दिया है। *'जीत के आसार न देखते हुए भी लड़ना/ लड़ाई की परंपरा को जिंदा रखना था।'* जैसी पंक्तियां उस सतत संघर्ष को प्रतिबिंबित करती हैं, जो आदमीपन को बचाए रखने के लिए जरूरी है। यहां स्त्री विमर्श की कोरी नारेबाजी नहीं, सदियों पुरानी उस कंडीशनिंग की पड़ताल की गई है, जिसने स्त्रियों के एक वर्ग को चेतनाशून्य बनाकर हर हाल में पुरुषों की सेविका बनने को बाध्य कर रखा है। *'जो मार खा लेती हैं फिर उठकर उन्हीं मर्दों के लिए सबसे अच्छा अचार/सबसे ज्यादा स्वाद वाली सब्जी बना देती हैं।'* प्रेम को भी रूपम, बनी-बनाई परिभाषा से इतर बिल्कुल अलग भावभूमि पर उतरकर महसूसती और व्यक्त करती हैं। इसकी बानगी *'हमने देखा एक-दूसरे को ऐसे जैसे/भूख की यातना में जिया मनुष्य रोटी को देखता हो।'* जैसी पंक्तियों में देखी जा सकती है। *

पुस्तक: हंसी और देस (कविता संग्रह), **लेखिका:** रूपम मिश्र, **मूल्य:** 250 रुपए, **प्रकाशक:** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

नैसर्गिक सौंदर्य से समृद्ध खूबसूरत देश किर्गिस्तान

घूमना किसे अच्छा नही लगता! खासकर जब नैसर्गिक सौंदर्य से समृद्ध देश में जाने का अवसर मिले। मध्य एशिया में स्थित किर्गिस्तान ऐसा ही एक छोटा सा और बेहद खूबसूरत देश है। हाल में एक सप्ताह की किर्गिस्तान यात्रा से लौटीं लेखिका वहां के अनुभव साझा कर रही हैं अपनी जुबानी।

ट्रैवलॉग

सोनल भारद्वाज

आमतौर पर कहा जाता है कि दुनिया में यदि कहीं स्वर्ग है तो वह देश है स्विटजरलैंड। वैसे हमारा कश्मीर भी कौन सा कम है! लेकिन किस्मत से हाल में हमें एक नए स्वर्ग से रूबरू होने का अवसर मिला, जिसे किर्गिस्तान के नाम से जाना जाता है। इसे मध्य एशिया का स्विटजरलैंड कहते हैं। इस देश का 90 प्रतिशत इलाका पहाड़ी है, जबकि मात्र 10 प्रतिशत आवासीय। 7.50 मिलियन आबादी वाला यह देश सोता कम है, जागता ज्यादा है क्योंकि यहां सूरज शाम 7.30 से 8 के बीच ढलता है।

साफ-सुथरा शहर राजधानी बिश्केक: जब हमारी फ्लाइट ने किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक के एयरपोर्ट में लैंड किया तो वहां का मौसम बड़ा खुशगवार दिखा। तापमान मात्र आठ डिग्री। बारिश ने हमारा वहां स्वागत किया। अकसर अप्रैल-मई के महीने में वहां बारिश होती है। हल्की ठंड और बारिश की वजह से अप्रैल के महीने में हमें जुलाई-अगस्त का अनुभव हुआ।

एयरपोर्ट से बाहर जिस टैक्सी पर हम बैठे, उसका चालक थोड़ी-बहुत इंग्लिश जानता था, तो हमारा काम आसान हो गया। वैसे वहां के लोग भारतीय फिल्म कलाकारों के बहुत दीवाने हैं। टैक्सी ड्राइवर न केवल थोड़ी-बहुत हिंदी भी बोल ले रहा था बल्कि उसकी टैक्सी में भारतीय फिल्मों के गाने भी बज रहे थे, जिसे हम भी गुनगुनाने लगे।

परिश्रमी-अनुशासित लोग: बिश्केक में घूमने के दौरान हमने महसूस किया कि किर्गिस्तान के नागरिक मेहनती, अनुशासित और स्वच्छता-पसंद हैं। वे ट्रैफिक नियमों का पूरा पालन करते हैं, यही वजह रही है कि हमने जहां एक तरफ गाड़ियों की कतारें देखीं लेकिन कोई हॉर्न बजाता नहीं सुना। व्यस्ततम सड़कों पर जहां एक तरफ गाड़ियों के काफिले थे तो उसी रोड पर बच्चों को बेहिचक साइकिलिंग करते भी देखा। 4 से 5 साल तक के बच्चे भी आराम से सड़कों पर साइकिल पर घूमते मस्ती करते हुए दिखे, क्योंकि सब ट्रैफिक रूल का पालन करते हैं। इसलिए वहां दुर्घटना की संभावना भी काफी कम रहती है। वहां पार्कों में बहुत शांति, धैर्य के साथ ज्यादातर महिला पुरुष अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठे बात करते नजर आते हैं। सड़क के बीचों-बीच पार्कों में चहलकदमी करना इस देश के लोगों को खूब पसंद है। बिश्केक शहर साफ-सुथरा दिखता है, इसकी बड़ी वजह है यहां किसी को गंदगी फेंकते या थूकते हुए देखे जाने पर पांच हजार रुपए का जुर्माना लगता है। शहर में कई बाग-बगीचे हैं। स्थानीय नागरिक इनका उपयोग टहलने, मनोरंजन करने और जॉगिंग करने में करते हैं।

तियान शान पर्वतमाला में स्थित इसिक कूल झील

दुनिया की सबसे बड़ी प्राइवेट मेडिकल यूनिवर्सिटी: एयरपोर्ट से होटल पहुंचने तक राजधानी बिश्केक की खूबसूरती के हमने कई नजारे देखे। भारतीय दूतावास पर अपना राष्ट्र ध्वज तिरंगा लहराते देखना, हमारी यात्रा का सबसे गौरवशाली दृश्य था। गीत याद आ गया, 'ऐ देश मेरे, तेरी शान पे सदके...।' कुछ ही देर में हम होटल पहुंच गए। चेकइन करने, फ्रेश होने के बाद हम इंटरनेशनल हायर स्कूल ऑफ मेडिसिन संस्थान (आईएचएसएम) के परिसर की ओर निकल पड़े। बताते चलें कि हम किर्गिस्तान, शैक्षणिक भ्रमण पर गए थे। रूस और किर्गिस्तान, विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं में से एक इंस्टीट्यूट है आईएचएसएम। संस्थान के प्रबंधन ने हमारा स्वागत किर्गिस्तानी रिवाज से किया। स्थानीय युवाओं ने हमें लोकल फोक म्यूजिक 'अलदशपा' सुनाया तो हम सब झूम उठे। हमारी टीम ने वहां पर अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थियों से देर तक मुलाकात की। इस संस्थान में भारतीय छात्रों के अलावा, अमेरिका, रूस, जॉर्जिया, चीन, पाकिस्तान जैसे देशों से छात्र एमबीबीएस करने आते हैं, क्योंकि चिकित्सा शिक्षा यहां पर ज्यादा सस्ती और सरल है। आईएचएसएम, किर्गिस्तान में सन 2003 में स्थापित प्राइवेट इंस्टीट्यूट्स में सबसे बड़ा संस्थान है। यहां कैंपस का माहौल, खान-पान, भाषा और संस्कृति, पूरी तरह हिंदुस्तानी परिवेश जैसा लगता है।

इसिक कूल झील-तियान शान पर्वतमाला: आईएचएसएम देखने के बाद हम तियान शान पर्वतमाला के विशाल पहाड़, दुनिया की सबसे ऊंचाई वाले इलाके में स्थित इसिक कुल झील और मनमोहक घाटियां देखने, वहां की सांस्कृतिक विरासत को महसूस करने के लिए लालायित थे। ऊंची पर्वतमालाओं के बीच टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरते हुए लगभग 4.30 घंटे के सफर के बाद हम इसिक कूल झील पहुंच गए। किर्गिज भाषा में इसीक्कुल का अर्थ होता है 'गरम झील' जो उत्तर-पूर्वी किर्गिस्तान में, तियान शान पर्वतमाला के बीचों-बीच स्थित है। यह कैस्पियन सागर के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह झील, गहराई के मामले में भी दुनिया में सातवें नंबर पर आती है। ऐतिहासिक प्रमाण बताते हैं कि झील की गहराई में 2,500 साल पुराने एक प्राचीन शहर के अवशेष मिले हैं, जो कभी सिल्क रूट (रेशम मार्ग) का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। झील के अलावा यह क्षेत्र अपने क्रिस्टल-क्लियर पानी, बर्फ से ढंकी चोटियों, पैरासेलिंग व ट्यूबिंग जैसी रोमांचक गतिविधियों के लिए भी प्रसिद्ध है। हमने यहां काफी देर रुककर तियान शान और पामीर-अलाई पर्वतमालाओं के भी दर्शन किए। किर्गिज नागरिक प्रकृति से बेहद प्यार करते हैं इसलिए उन्होंने जंगल, पहाड़, नदियों को बचाए रखा है। यही नहीं स्थानीय नागरिकों के आवास भी हरियाली से सजे दिखाई देते हैं।*

भारतीय व्यंजनों का मिला आनंद

किर्गिस्तान का खान-पान पूरी तरह मांसाहार पर केंद्रित है, लेकिन राजधानी बिश्केक में 4 से 5 इंडियन रेस्टोरेंट भी हैं, जो भारतीयों द्वारा ही संचालित किए जा रहे हैं। यहां खाना बनाने वाले शेफ भी भारत से ही बुलाए गए हैं, ताकि भारतीय स्वाद यहां आने वाले छात्रों और अन्य लोगों को मिल सके। यहां पाकिस्तानी नागरिक भी काफी संख्या में हैं। किर्गिस्तान में ड्राय फ्रूट्स और फ्रूट्स बहुत अच्छी क्वालिटी के मिलते हैं, क्योंकि यहां की जमीन में लोग केमिकल उर्वरकों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। किर्गिस्तान मूल रूप से मुस्लिम कंट्री है, लेकिन यह मुस्लिम देश होते हुए भी यह महसूस ही नहीं होने देता कि किसी एक परंपरा या धर्म से बंधा हो। किर्गिस्तान में महिला और पुरुष को समान दृष्टि से देखा जाता है, सभी को बराबरी का हक है। स्थानीय बाजारों में महिलाएं व्यापार करती खूब दिखाई देती हैं। अपनी यात्रा के अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि केवल नैसर्गिक सौंदर्य के मामले में ही नहीं महिला अधिकार और स्वतंत्रता के मामले में भी दुनिया के लिए किर्गिस्तान, आदर्श देश माना जा सकता है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

नरेंद्र कुमार

वर्कप्लेस कोई भी हो एंप्लॉई की इंपॉर्टेंस उसके वर्किंग स्टाइल और उसके बिहेवियर से तय होती है। अगर आप भी चाहते हैं कि वर्कप्लेस पर आप सबसे इंपॉर्टेंट एंप्लॉई माने जाएं तो आपको यहां बताए जा रहे सजेशंस को फॉलो करना होगा।

फॉलो करें ऐसी वर्किंग स्टाइल ऑफिस में बढ़ाएं अपनी इंपॉर्टेंस

हर वर्किंग प्रोफेशनल की यह चाहत होती है कि ऑफिस में उसकी इमेज, उसकी वैल्यू दूसरों से अच्छी हो। इंपॉर्टेंट एंप्लॉइज में उसकी गिनती हो। इंपॉर्टेंट एंप्लॉई बनने के लिए खुद को ऐसा बनाएं कि आपके बिना काम स्मूदली न हो पाए या कोई भी जरूरी फैसला लेते समय आपको उसमें शामिल करना जरूरी हो जाए। याद रखिए, यह पोजीशन किसी को खुद ब खुद नहीं मिल जाती बल्कि इस स्थिति में पहुंचने के लिए स्मार्ट और समझदारी से काम करना होता है। इसके अलावा आपमें कुछ क्वालिटीज का होना भी जरूरी है।

रिप्लेसेबल से इरिप्लेसेबल बनिए: हर दफ्तर के दो तरह के एंप्लॉई होते हैं, एक जो केवल अपना काम करते रहते हैं। दूसरे ऐसे एंप्लॉई जिनके बिना ऑफिस के कई काम अटक जाते हैं, कोई बड़ा फैसला नहीं लिया जा सकता है। आपको यह दूसरा कर्मचारी बनना है ताकि आपकी गिनती ऑफिस के सबसे महत्वपूर्ण एंप्लॉइज में हो। ऐसा बनने के लिए आपको कुछ बातें अमल में लानी चाहिए। जैसे दफ्तर में आपका जो दायित्व है, उसके एक्सपर्ट बन जाएं। ऐसी स्किल में कमांड हासिल करें, जो ऑफिस में दूसरे लोगों के पास न हो। ।

प्रॉब्लम सॉल्वर बनिए: दफ्तर में अधिकतर लोग समस्या बताने में माहिर होते हैं। लेकिन इंपॉर्टेंट एंप्लॉई उसे माना जाता है, जो बॉस को प्रॉब्लम तो बताए, साथ ही यह भी कहे कि इस प्रॉब्लम को कैसे सॉल्व किया जा सकता है। हर बॉस को अपने अंडर ऐसे सहयोगी चाहिए होते हैं, जो केवल प्रॉब्लम्स के बारे में ही न बताए, पर उन गलतियों को हल करने की काबिलियत भी रखे। अगर आपको ऑफिस में इंपॉर्टेंट बनना है तो प्रॉब्लम सॉल्वर बनिए, न कि प्रॉब्लम रिपोर्टर।

जिम्मेदार बनिए: जो भी काम आपको मिले, उसे जिम्मेदारी से पूरा करें। उसे न करने या टालने के बहाने न बनाएं। तय समय सीमा के भीतर अगर काम नहीं होता, तो काम करने का भी कोई महत्व नहीं रह जाता है। इसलिए डेडलाइन के भीतर काम पूरा करने की आदत डालें।

काम दिखना भी चाहिए: यह सच है कि अगर आप दिखेंगे नहीं, तो आप महत्वपूर्ण भी नहीं माने जाएंगे। इसलिए काम करें और दफ्तर में महत्वपूर्ण समय पर मौजूद रहें। अपने किए हुए काम की अपडेट उन लोगों तक पहुंचाएं, जिनको आपके द्वारा किए गए काम से मतलब है। बॉस के साथ होने वाली मीटिंग में बोलें और अपनी बात को संक्षिप्त और स्पष्ट तरीके से सबके सामने रखें। वैल्यू और विजिबिलिटी मिलकर ही किसी एंप्लॉई को उसके वर्कप्लेस में महत्वपूर्ण बनाती है।

बॉस के 'गो टू पर्सन' बनिए: हर दफ्तर में एक या दो लोग ऐसे होते हैं, जिन पर बॉस आंख मूंदकर भरोसा करते हैं, क्योंकि जब-जब मौका मिला, उन्होंने खुद को इसके लायक सही साबित किया होता है। बॉस का 'गो टू पर्सन' बनना मुश्किल नहीं है, सिर्फ करना यह होता है कि बॉस द्वारा दिए गए काम को समय पर, साफ-सुथरे ढंग से और परफेक्ट तरीके से करें ताकि बॉस के काम को आप आसान बना सकें।

अपने संवाद कौशल को बढ़ाएं: अगर दफ्तर का महत्वपूर्ण कर्मचारी बनना है तो संवाद कला में माहिर होना भी जरूरी है। बात साफ और संक्षिप्त करें। अपने ई-मेल और मैसेज प्रोफेशनल रखें। लोगों को कोई बात समझानी हो तो इस तरह समझाएं कि उन्हें आसानी से आपकी बात समझ में आ जाए। अगर आपमें यह क्षमता है, तो आप निश्चित ही अपने वर्कप्लेस के महत्वपूर्ण एंप्लॉई हैं।

लोगों से कनेक्ट रहें: प्रोफेशनल लाइफ में भी पर्सनल कनेक्शन बनाना जरूरी होता है। जहां भी रहें, वहां हमेशा महत्वपूर्ण लोगों के साथ अपना एक कनेक्ट डेवलप करें। अगर किसी कंपनी के एक विभाग में काम कर रहे हैं, तो अन्य विभाग के कुलीग्स से भी कनेक्ट करें। ये कुछ ऐसे गुण हैं, जिनके होने पर आप अपने दफ्तर के महत्वपूर्ण कर्मचारी बन जाएंगे।*

आज के डिजिटल दौर में रिश्तों की दूरियां कम करने में तकनीक की बड़ी भूमिका हो गई है। तकनीक, मां और उनके दूर रह रहे बच्चों के बीच संवाद को भी नया आयाम दे रही है। इसके विविध पहलुओं पर एक नजर।

डिजिटल दौर में मिल रहा मां-बच्चे के रिश्ते को नया आयाम

टेक्नो-इंपैक्ट

नम्रता नदीम

एक समय था, जब मां की आवाज घर के आंगन से आती थी, रसोई से आती थी, दरवाजे के पार वाली देहरी से आती थी और चेहरे की झलक से ही सारे स्नेह की भाषा पढ़ ली जाती थी। आज बच्चे पढ़ाई के लिए, नौकरी या बेहतर अवसरों की तलाश में, घर से दूर दूसरे शहर या दूसरे देशों में भी रह रहे हैं। ऐसे में मांएं अपने बच्चों से आधुनिक संचार तकनीक के जरिए ही जुड़ी होती हैं। ऐसे ही तकनीकी साधनों में व्हाट्सएप, वीडियो कॉल और सोशल मीडिया के तमाम दूसरे माध्यम उपलब्ध हैं।

डिजिटल युग में रिश्तों का नया आयाम: आज तकनीक बदल गई है, जीवन जीने का ढंग बदल गया है। डिजिटल युग ने रिश्तों को एक नया आयाम दिया है और इसमें मां का उसके बच्चों के साथ रिश्ता भी शामिल है। वास्तव में सूचना तकनीक ने बच्चों और मां के रिश्तों में अभूतपूर्व बदलाव ला दिया है। आज बच्चे देश-विदेश में कहीं हों, जब उन्हें मां की याद आती है, झट वीडियो कॉल लगा देते हैं और सामने मां दिखने लगती है। मां को सामने देखते हुए बात करने पर लगता है कि जैसे कोई दूरी ही न हो। बच्चों को यह एहसास होता है कि जैसे मां उनके बिल्कुल करीब बैठी, उनसे बतिया रही है। उसके चेहरे की हर भाव-भंगिमा को पढ़ने की सुविधा भी नई तकनीक ने उपलब्ध करवा दी है। आज शहर के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों में रहने वाली मांएं अपने बच्चों के साथ सहजता से स्मार्ट फोन चलाती हैं। अपने बच्चों को तरह-तरह के व्हाट्सएप मैसेज भेजती हैं। वीडियो कॉल करके उनके हालचाल पूछना, यह जानना कि खाना खाया कि नहीं, खाना खाया तो क्या खाया? और इस सबको सिर्फ सुनने में ही नहीं अपनी आंखों से भी देखने का सुख मांएं आधुनिक मीडिया तकनीक के जरिए ले रही हैं।

सुकून देता है यह बदलाव: आज के दौर की मांओं का अपने बच्चों के साथ डिजिटल रिश्ता बड़ा दिलचस्प हो गया है। वे इसके जरिए न सिर्फ बच्चों के साथ संपर्क में रहती हैं बल्कि आधुनिक जीवन की सारी जरूरी गतिविधियों को भी सीखती हैं या सीखने की कोशिश करती हैं। मैसेजिंग, इमोजी आदि अभिव्यक्ति के इन नए तरीकों से मांएं भी समृद्ध हो रही हैं और इनके बच्चे भी। जब मांएं और बच्चे एक-दूसरे से ऑडियो कॉल पर बात करते हैं, उस समय मां का 'मैं ठीक हूं' कहना और वीडियो कॉल पर 'हां, मैं ठीक हूं' कहने में फर्क होता ही नहीं दिखता भी है। वीडियो कॉल में साफ दिखता है कि मां वाकई ठीक है या नहीं। यह तकनीकी बदलाव सुकून देता है, क्योंकि भले मां और उसके बच्चे के बीच दूरी हो, लेकिन भावनाओं का जुड़ाव इस दूरी के बाद भी डिजिटल तकनीक के जरिए बना रहता है।

ऐसे में बच्चों का भी फर्ज बनता है कि जब वे मां से बात करें तो सिर्फ उसमें शब्द ही न हों या सिर्फ संदेश ही न भेजे जाएं बल्कि मां से बात करने के जरिए अपनी उपस्थिति को भी व्यक्त करें। उन्हें बिना किसी कारण और बिना किसी अनुमान के फोन करें और देर तक बातें करें। इससे मां को बहुत खुशी मिलेगी।

मेल-मिलाप भी है जरूरी: अगर मां आधुनिक डिजिटल तकनीक से पूरी तरह अनभिज्ञ हो, तो कई बार उनके लिए यह बदलाव जटिल हो जाता है। उन्हें व्हाट्सएप्प यूज करना या वीडियो कॉल करना उलझन भरा लग सकता है। इन तकनीकों का उपयोग आज भले ही आम हो गया है, लेकिन मां की भावनाएं अब भी पारंपरिक हैं। देखा जाए तो तकनीक ने संवाद को चाहे जितना आसान बनाया हो, लेकिन संवाद की गइराई को कम कर दिया है। मांएं अपने बच्चों के साथ गहरा भावनात्मक जुड़ाव चाहती हैं। मां-बच्चे का भले ही लगातार फोन से संपर्क बना रहे। इस फोन से रिश्तों का कारवां भले ठीकठाक चलता दिखे, लेकिन मां-बच्चे के इस रिश्ते में वास्तविक मेल-मिलाप बहुत जरूरी होती है। तकनीक चाहे जितनी जीवंत लगे, मां के साथ साल में कुछ दिन जरूर गुजारें। इससे इस डिजिटल दौर में मां और आपके बीच रिश्तों की ऊर्जा जीवंत बनी रहेगी। यानी तकनीक का उपयोग करने पर भौतिक संपर्क की महत्ता को अनावश्यक मानना गलत है। इसलिए जब आप वास्तव में अपनी जॉब या पढ़ाई की वजह से दूर हों तब तो तकनीक का यूज ठीक है लेकिन मौका मिलने पर मां से जरूर मिलें।*

तकनीक से मिलता है मां को सुकून

- विभिन्न सर्वेक्षणों के दौरान यह देखा गया है कि 99 फीसदी मांएं घर से बाहर रह रहे अपने बच्चों से हर दिन बातें करती हैं। इनमें से करीब आधी तो हर दिन एक बार वीडियो कॉल भी करती हैं।
- जब मांएं डिजिटल तकनीक के जरिए बच्चों से वीडियो कॉल के जरिए बात करती हैं, तो वह सिर्फ उनका चेहरा भर नहीं देखतीं, उनकी खुशी, उनका दुःख, उनकी सेहत सब कुछ वो देख लेती हैं, इससे उन्हें सुकून और तसल्ली मिलती है।

मातृ दिवस विशेष

सिने ट्रेंड

हर्ष

हिंदी फिल्मों और फिल्मी गीतों में मां के महत्व को खूबसूरती और प्रमुखता से उभारा जाता रहा है। खासतौर पर फिल्मों में मां पर केंद्रित कई ऐसे हृदयस्पर्शी गीत रचे गए हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। मां पर केंद्रित दिल को छू लेने वाले ऐसे ही कुछ फिल्मी गीतों पर एक नजर।

मां को समर्पित गीतों से गुलजार है बॉलीवुड

मां और बच्चे का संबंध बीज और वृक्ष के संबंध जैसा गहरा, विस्तृत और अविवेचनीय होता है। इसलिए मां और बच्चे के बीच अनोखे रिश्ते को शब्दों में व्यक्त कर पाना आसान नहीं है। फिर भी बॉलीवुड फिल्मों में अनेक गीतकारों ने समय-समय पर इस अनोखे प्यारे रिश्ते को अपने भावपूर्ण गीतों में व्यक्त किया है।

तुझे सब है पता, है न मां: प्रसून जोशी का लिखा और शंकर महादेवन का गाया गाना *'तुझे सब है पता, है न मां..'* फिल्म 'तारे जमीन पर' का है। यह गीत हर किसी के दिल को छूता है। जैसे यह गीत न हो हर बच्चे के दिल से निकली आवाज हो। हम सब ऐसे ही तो होते हैं बचपन में, जो बात अपनी मां से किसी कारणवश नहीं कह पाते उस बात को भी हमारी मां जान लेती है। भूख लगने पर हमें क्या खाना है, यह हमसे बेहतर हमारी मां को पता होता है। हमारी खुशी-गम, डर-चिंता, पसंद-नापसंद सब से वाकिफ होती है हमारी मां। *'मैं तुझे बतलाता नहीं, पर अंधेरे से डरता हूं मैं मां/तुझे सब है पता, है न मां'* एक बच्चे की मासूम पुकार है यह गीत, जो हर मां की रूह तक पहुंचता है।

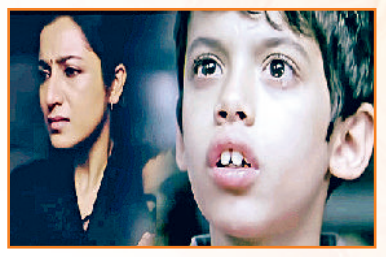

फिल्म 'तारे जमीं पर'

फिल्म 'रंग दे बसंती'

तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है: 'राजा और रंक' फिल्म का यह गीत *'तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है..'* अभिनेत्री निरूपा राय और बाल कलाकार महेश कोठारे पर फिल्माया गया है। लता मंगेशकर की मनमोहक आवाज ने गाने के बोल में मां के लिए प्रयोग किए गए प्रतीकों और शब्दों को और भी मुलायम और हृदयस्पर्शी बना दिया है। मां असल में क्या होती है, उसकी विशाल हृदयता और उसकी ममता की उदात्तता को इस छोटे से गीत में समेट कर गागर में सागर भर दिया गया है। आनंद बख्शी के लिखे इस गीत को संगीतबद्ध किया है संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने।

फिल्म 'राजा और रंक'

तेरी उंगली पकड़ के चला, ममता के आंचल में पला: 'लाडला' फिल्म का गीत *'तेरी उंगली पकड़ के चला, ममता के आंचल में पला..'* एक बेटे की भावुक स्वीकारोक्ति है। वह स्वीकार करता है कि जीवन पथ पर उसकी मां ने उसे चलना सिखाया। जीवन के इस सफर में मिलने वाली धूप से बचाने के लिए हर वक्त मां ने उसे अपनी ममता की छांव तले सहेज कर रखा। मां के बिना उसका जीवन कुछ भी नहीं। मां और उसके बेटे के बीच मधुर रिश्ते की चाशनी में

फिल्म 'लाडला'

छनकर निकला यह गीत जितना अर्थपूर्ण है उतना सुरीला भी। यह गीत फरीदा जलाल और अनिल कपूर पर फिल्माया गया है। समीर के लिखे इस गीत को उदित नारायण और ज्योत्सना ने अपनी आवाज दी है।

लुका छुपी बहुत हुई, सामने आ जा ना: फिल्म 'रंग दे बसंती' में प्रसून जोशी का लिखा गीत, *'लुका छुपी बहुत हुई, सामने आ जा ना..'* बेटे की मौत पर एक मां की व्याकुलता और ममता को एक साथ जोड़ने का कमाल करता है। गीत में मां अपने बेटे से संवाद करते हुए कहती है, *'लुका छुपी बहुत हुई/सामने आ जा ना/कहां-कहां ढूंढा तुझे/थक गई है तेरी मां'*।

गीत के दृश्य में बेटे की चिता सामने जल रही है और मां इस सदमे से अपनी सुध-बुध खो बैठती है। उसके कलपते हृदय से बोल निकल रहे हैं- *'आजा सांझ हुई मुझे तेरी फिकर/धुंधला गई देख मेरी नजर आ जा ना।'* आंखों को नम कर देने वाले इस भाव पूर्ण गीत को गाया है स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर और एआर रहमान ने।

मां जैसी दुनिया में है कोई कहां: गीतकार अंजान का लिखा और किशोर कुमार का गाया लोकप्रिय गीत *'मां जैसी दुनिया में है कोई कहां..'* फिल्म 'पांच कैदी' का है। इस गीत के जरिए यह भाव प्रकट किया गया है कि मां जैसा दुनिया में कोई नहीं हो सकता। इसीलिए मां को धरती पर साक्षात ईश्वर का स्वरूप माना जाता है। इसीलिए तो मां का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है। इन सभी भावों को इस गीत की आगे की पंक्तियों में बड़ी ही खूबसूरती से पिरोया गया है, *'मां तो है मां/मां तो है मां/मां जैसी दुनिया में है कोई कहां/ओ मां ओ मां//मां तू ही मंदिर/मां तू ही पूजा/पूजा का वरदान मां/ये लोक तू है/परलोक तू है/तुझमें है दोनों जहां।'*

फिल्म ' पांच कैदी'

ऐ मां, तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी: मां को भगवान के समतुल्य मानने वाले भावों को वर्ष 1966 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'दादी मां' के एक गीत में भी व्यक्त किया गया है। उस गीत के बोल हैं *'ऐ मां, तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। उसको नहीं देखा हमने कभी पर इसकी जरूरत क्या होगी..'* मजरूह सुल्तानपुरी के इस भावपूर्ण गीत को संगीत से संवारा था रोशन ने और अपनी आवाज दी थी, महेंद्र कपूर और मन्नाडे ने।*